॥ श्रीः ॥

नासिकेतोपाख्यान ।

अर्थात्

यथायोग्य कर्मानुसार स्वर्गनरकप्राप्तिविवरण
मनोहर पद्योंमें वर्णित.

श्रीयुत–चुनीलालात्मज–कविवर
सत्यनारायणजी विरचित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,
निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्–मुद्रण यंत्रालयमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७२ शके १८३७

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली
खंबाटा लैन "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर
यहीं प्रकाशित किया.

प्रस्तावना।

प्रियपाठक !

धन्य है उस सच्चिदानंदआनन्दकंद परब्रह्म परमेश्वरको कि, जिसके पलकमात्रमें इस असार संसारमें नानाप्रकारके कौतूहल व तरह-तरहके दिव्य पदार्थ निर्मित और लय हुआ करते हैं. जिसका दृष्टि गोचर होना सर्वको सम्यक् असंभव है. अतएव इन्हीं कक्षाओंमेंसे हमारे एक परमसुयोग्य कविवर श्रीयुत–पण्डित सत्यनारायणजीने सर्व सुजनोंकेहितार्थस्वर्गकीनिशैनी "श्रीनासिकेतोपाख्यान" भाषा दोहा, चौपाई आदि सुललित परम मनोरम छंदोंमें निर्मित किया. जिसमें नासिकेतका सदेह स्वर्गमें जाना और यम यातना अर्थात् जिन जिन कर्म करके नर स्वर्ग नरकका सुख दुःख भोग करते हैं वह देखना और फिर सदेह लौट आना पश्चात् अपने पिता व सकल मुनियोंसे वहांका वृत्तान्त कहना इत्यादि विचित्र गूढकथा वर्णित हैं. भगवद्भक्त साधुजनोंके सिवाय गृहस्थोंकोभी इसकी एक २ प्रति रखना परम लाभकारी दुःखहारीहै. इस पुस्तकके अनुसार वर्तनेसे कोई पुरुष कदापि नरकको नहीं जा सक्ता ॥

आपका शुभचिंतक–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–मुम्बई.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ नासिकेतभाषाकी अनुक्रमणिका ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।





अध्याय १
वैशंपायनऋ
जन्मेजयरा
पिप्पला



अध्याय २
ब्राम्हणोंको स्वर्णदान होता है
चद्रप्र



अध्याय ३
चंद्रप्रभा



अध्याय ४
मंडळ
राजारघु


अध्याय ५
त्र· मंडळ
ना.


चित्रगुप्त·
यमदूत·
अध्याय ६
नासि·


नासिकेत·
अध्याय ७।८
ना·


पापी·
अध्याय ९
यमधर्म


अध्याय १०
यमदूत
पापी


दैत्य.
अध्याय ११
कृतांत.


अध्याय १२
गानासुनतेहैं
पुण्यवान


पुण्यवानस्नान
अध्याय १३
पुण्यवानजीमतेहैं.


अध्याय १४
यमदूत.
यमदूत.
पापी
पापी
पापी


अध्याय १५
पुण्यवानलोक गौकापुछपकडके
वैतरणी पारउतरते-


अध्याय १६
नारद
यमधर्म
ना.
यमधर्म


अध्याय १७।१८
यमदूत.
यमधर्म
नारद
यमधर्म

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ

नासिकेत-भाषा-प्रारम्भः ।



दोहा-शिवपद नमि शिवसुतसुमिरि, वाणीपद शिरनाय ॥
कहत चरित शुचि सत्य कवि, भाषा छंद बनाय १ ॥
श्रीगुरुपद नख रवि निरखि, मो मन जलज फुलान ॥
यह चरित्र मकरंद शुचि, सुबुध छपद छकि जान २ ॥
रमा रमण वारिज भवन, वंदि शिवा सनकादि ॥
कहौं जन्म दिन ग्रंथकर, है चौपाइन आदि ॥ ३ ॥

चौ०-एक समय जनमेजयराजा ❀ करि स्नान ध्यान शुभ काजा ॥
सहित समाज सकल रनिवासू ❀ हर्षित किय सुरसरि तट बासू
सब विधि शुचि मन बैठु नरेशा ❀ नवल उदय जस जासु दिनेशा
बहु ऋषि युत ऋषि वैशंपायन ❀ सब गुण भवनब्रह्म पारायन ॥
तपनिधि ते गमने तिहि काला ❀ नयनविशाल वसन मृगछाला
खडे होइ आसन नृप दीना ❀ संत दरश शंकर सम चीना ॥
बहुत विनय करि पूछत राऊ ❀ तब ऋषि बोले सहज सुभाऊ

दोहा-जो पूँछहु सो कहहुँ नृप, मोहिं अधिक अनुराग ॥
वेद धर्म नृपवंश शुचि, ज्ञान भक्ति वैराग ॥ ४ ॥

जनमेजय उवाच ।

चौ०-माथनाइ कह नृपसुतुस्वामी ❀ रवि सम सब घट अंतर्यामी ॥
गति तुम्हारि सर्वत्र कृपाला ❀ सुनियविनय मम दीनदयाला
दिति अरु अदिति वंश मैं जाना ❀ मनुभव वंश सकल सुनि माना
नग नर नाग उरग झख जाती ❀ सिद्ध पिशाच विहँग बहु भाँती
जस कछु इन कर चरित सुहावा ❀ तिलतिलभारि प्रभु मोहिं सुनावा

---

१ इन १४ चौपाईनके आदिके अक्षर जोरिबेते यह चौपाई जन्मग्रंथकी निकसती है चौपाई ॥ एक सहस नवसत नखसंवत । मारग सुदि मनासिज तिथि भूसुत ॥

थिर चर जंतु वसत जग माहीं ❋ भू चरित्र सुनि कवन अघाहीं॥
सुनि हौं स्वर्ग नर्ककी गाथा ❋ तव मुख सरसिजते अब नाथा।

दोहा–यहै लालसा अधिक अब, सो पुरवहु सर्वज्ञ॥
नीति वेद पथ शास्त्र मख, यन्त्र मंत्र विधितज्ञ॥५॥

चौ०–सुनतवचनकह वैशंपायन ❋ सुनिय नृपति मणि धर्मपरायण
यह चारित्र कलिकलुष नशावन ❋ नासिकेत इतिहास सुहावन॥
सहित समाज सकल ऋषिराजा ❋ बैठहु मन थिर सुनिबे काजा॥
ऋषि इक भयो धर्म पथ पालक ❋ वेद प्रवीण नाम उद्दालक॥
ब्रह्माके सुत सो विख्याता ❋ स्मृति सिद्धांत नीतिपथ ज्ञाता
दांत दक्ष मुनिवर तपखानी ❋ जासु कथा शिव उमहि बखानी
आश्रम तासु सुरसरि तीरा ❋ निर्मल जल जहँ त्रिविधसमीरा
सो थल अतिशय रम्य भुवाला ❋ रहत वसंत जहाँ सब काला॥

दोहा–बहु ऋषिगण तप करत जहँ, निजनिज नियमन साधि
सबहिसुखदआश्रमसुभग, जहाँ न आधी व्याधि॥६॥

चौ०–भांतिभांति तरु जेहि वनमाहीं।सुरपादप लखि तिनहिंलजाहीं
अंब कदंब निंब कचनारी ❋ पनसपलाश सिता सहकारी॥
ताल तमाल सालवट अमिली ❋ खैर पतंग सीस हड बकुली॥
चंदन युगल अशोक उजारू ❋ धौं करंज पीलू सुरदारू॥
बडहल बेल बदाम सुपारी ❋ कीकर पाकर कैथ छुहारी॥
पिंड खजूर खरोट मनोजी ❋ पिंडालू हिंगोट चिरोंजी॥
नारंगी निंबू चकोतरा ❋ दाडिम सेव अँजीर संतरा॥
तुलसी युगल गुलाब सुबेला ❋ आडू अरु अंगूर करेला॥

दोहा–फूलित फलित अनेक तरु, नित नव अंकुरदेत॥
शोभित नाना भांते ह, निरखत मन हरि लेत॥७॥

चौ०तिहिवनमहँइकसुभगतलावा❋जिहिनिरखतमनसहजभुलावा
विविध पषाण जासु सोपाना ❋ जल अगाध सो सुधासमाना॥
चक्रवाक सारस बक मोरा ❋ कोकिल कीर कपोत चकोरा॥

तिहि सर तीर फलिततरु पाहीं ❀ कूजहिं विहरहिं नृत्यकराहीं ॥
राजहंस मैना दुइ खंजन ❀ खिले कमल बहुविधि मनरंजन
मुनि उद्दालक तिहि सरतीरा ❀ करहिं उग्र तप अति मतिधीरा॥
पिप्पलाद मुनि तिहिथल आवा ❀ लखि उद्दालक तिहिशिरनावा॥
पूंछा कुशल लाइ उर लीना ❀ अर्घ्यादिकपूजनपुनिकीना ॥
छंद--अर्घादि षोडश भाँति पूजन कीन उद्दालक सही॥
कुश डालि सन्मुखबैठि विनती सहित असवाणीकही
धनि भाग्यमम मुनि आगमनतव, कहियकिहिकारणभयो
सुनि वचन सविनय वेद पारग हर्षि उर उत्तर दयो १

पिप्पलाद उवाच ।

दोहा--सुनियमहामुनिवचनमम, हरहुमोहअतिमोर ॥
हैअमोघ फल चारि प्रद, मुनिवर दरशन तोर॥८॥
चौ०-अहो महातप करहु मुनीशा ❀ बीते छ्यासी सहस बरीसा ॥
सब ऋषिसहित कुटुंब तपाहीं ❀ कहिय सोतवकिहिकारननाहीं
घर घरनी सुत पौत्र घनेरे ❀ हैं सबके तुम्हरे नहिं नेरे ॥
वंशनष्ट जेहि नर कर भाई ❀ तिहि कर जनु सरवस्व नशाई॥
देव पितर तेहि तुष्टहि नाहीं ❀ बिना पुत्र स्वर्गेहुँ गति नाहीं॥
होइ सुपूत बहुत कुल तारै ❀ वंश बढावन काज सँभारै ॥
सूनो गृह विन बालक केरो ❀ वंश नाश पुनि श्रुति असटेरो॥
बहुत कहौं का मुनि तप धारण ❀ केवल पुत्र वंश कर कारण ॥
दोहा--जो संमत मन मानहू, तौ यह रचौ उपाय ॥
काहू राजकुमारकी, पुत्री याचहु जाय ॥ ९ ॥

उद्दालक उवाच ।

चौ०-पिप्पलादमुनि सुनु मन बानी ❀ उचितनकहेउवचन विज्ञानी
छ्यासी सहस वर्ष तप धारा ❀ तासन कहत करहु तुमदारा ॥
सुनि सुनि वेद नीति अस गावै ❀ ब्रह्मचर्य जे नियम नशावै ॥
ते नर भुगतें नरक अनेका ❀ मैं किमि छाँडहुँ पाइ विवेका॥

पिप्पलाद कह सुनु उद्दालक ❋ तुम तौ परम धर्म पथ पालक ॥
सुने धर्म इतिहास पुराना ❋ विनु संतति कत धर्म बखाना ॥
सुत हित जिन मुनिवर रतिठानी ❋ सुने न भ्रष्ट भये ते ज्ञानी ॥
ताते तात उचित मतमोरा ❋ सफल करै प्रभु कारज तोरा ॥
दोहा–जेहि नर ने संतान हित, रमी बाल ऋतुकाल ॥
यह स्वायंभुवमनुवचन, तिनहिं न दोष त्रिकाल १०

वैशंपायन उवाच ।

चौ०-पिप्पलाद अस वचन सुनाई ❋ निजआश्रम गवने शिरनाई ॥
भयो विघ्न तेहि तप महँ एहू ❋ उद्दालक सम दुखित न केहू ॥
करै विचार वंश किमि करहूं ❋ कासन जाय वचन अनुसरहूँ ॥
केहिकी सुता कहाँ मैं पाऊँ ❋ करौं कहा किहिके ढिगजाऊँ ॥
इमि चिंताकुल दुखित मुनीसा ❋ दिवस कटत जनु कोटिवरीसा
निज तप सुमिरि ध्यान तबधारा ❋ लखी तहां विधि दै हैं दारा ॥
अस विचारि गवने विधि पासा ❋ कीन प्रवेश सुमिरि दुरवासा ॥
विधि पद वंदि ठाढ भे जबहीं ❋ कमल भुवन जाना सब तबहीं ॥
दोहा–स्वागत कहिपूंछी कुशल, सन्मुख आसनदीन ॥
अहोभाग्य मुनिनाथ मम, कहौ कृपा कत कीन ११
चौ०-इंद्रियजित तुम सब गुण आगर ❋ क्रोधरहितकरुणानयसागर
कहहु कवन आवन कर हेतू ❋ सुनत वचन कह मुनि कुलकेतू ॥
मधुर बचन कर जोरि सभीता ❋ उद्दालक कह अधिक विनीता
तुमरे दरशनते सुनु नाथा ❋ पाइ जन्म फल भयऊँ सनाथा ॥
सफल काम मम पूरण स्वामी ❋ एक पुत्र विनु अंतर्यामी ॥
यह चिंता मोहिं अधिक सतायो ❋ तेहि कारण मैं प्रभुढिग आयो
कह विधि सुनु उद्दालक बैना ❋ जो कछु कहौं सत्य सुख दैना ॥
पहिले पुत्र मिलै तोहिं आई ❋ तापीछे गृहिणी सुखदाई ॥
छन्द–पाछे मिलै गृहिणीतुम्हैं रविवंश रघुनृपकी सुता
वय जाति शील सुभाव तनु गुण रूप लक्षण संयुता ॥

ताते बढै तव गोत सुनि मुनि वचन मम सति मानियो ॥
अब जाहु निज थल करहु तप संदेहजनिउर आनियो २
सुनि वयन विधिके चकित ह्वै करजोरिमुनिवरपुनिकही
किमि होइगो सुत दारविनु पुनि वचन तव मिथ्यानहीं
यह दूरि संशय करिय प्रभु सुनि वचन मुनिवरके जबै
विधि भये अंतर्द्धान निज थल, विप्र वर आए तबै॥३॥
दोहा-सुनि जनमेजय चरितयह, कह्यो सत्य सुखपाइ॥
जेहिं चाहिय संतानसुख, पढै सुनैचितलाइ १२

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायण
विरचिते नासिकेतोपाख्याने उद्दालक पिप्पलादविरंचि-
संवादो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा-परम चतुर नृप सुनिय अब, सुंदर चरितउदार ॥
तिय अभिलाषा जिय वसी, कियतपविविधप्रकार १॥
उद्दालक विधि वयनको, निशिदिन सुमिरि सिराहिं ॥
खस्यो रेत मुनिवर लख्यो, प्रमुदित भे मन माहिं॥२॥

छन्द-नाराच ।

धारि पद्ममें वह रेत, करि बंद जतन समेत ॥
कुशदाम सों कसि ताहि, दिय गंगमाहिं बहाहि ॥
बहि चल्यो विधिवश कंज,अब सुनिय नृप मुदगंज ॥
इक सुरसरी जल तीर, रघुराज वसु नर वीर ॥ १ ॥
ताकी सुता छबि सींव, सुनु सकल तनु बिच जीव ॥
अति तुंग महलन माहिं, वयसा समूह रहाहिं ॥
छबि तप्त कंचन अंग, लखि रूप मोह अनंग ॥
जेहि नयन लखि मृग कंज, सकुचैं हिय निजखंज ॥२॥

छंद--सकुचैं हिये लखि नयन खंजन रूप अद्भुतदेखिये॥
गंधर्व किन्नर नाग नर सुर असुर बिच नहिं पेखिये ॥
राजति अटापर जनुघटा पर चपल अनुपम दामिनी॥
इक लाख कन्या संग जाके रूप गर्वित कामिनी॥२॥

दोहा-रंभादिक षट् उर्वशी, तुलै न ताके संग ॥
चंद्रवती की सोरहीं, कला न एकौ अंग ॥ ३ ॥

जनमेजय उवाच ।

चौ॰कहमहीपसुनिये मुनिनायक ❋ तववाणी चारिहु फलदायक॥
को रघु कवन काल किमि राजू ❋ कसगुण कस वपु शीलसमाजू॥
सो सब कहिय कृपाकरि स्वामी ❋ देव दयानिधि अंतर्यामी ॥

वैशंपायन उवाच ।

सुनि तब असकहविहँसिमुनीशा ❋ सुनियमुदितयहचरितमहीशा॥
द्वापर लगत भयउ रघुराऊ ❋ तासु राज्य यह प्रगट प्रभाऊ॥
प्रजा वृद्धि सुरभिक्ष हमेसा ❋ विप्र वेद धर शमन कलेसा ॥
सत्यवचन रत सब नर नारी ❋ धनी धर्मरत निधज सुखारी ॥
तासु राज्य क्षत्रिय रणधीरा ❋ गो भूसुर गुरुसेवक वीरा ॥

दोहा--तासु सुता चंद्रावती, सखी सहस सतसंग ॥
नेम तासु नित प्रात उठि, मज्जन करै सुगंग ॥४॥

चौ॰एक दिना सखि संग सयानी ❋ गंगतीर गमनी छबिखानी ॥
कुंडल लोल कपोलन छाजैं ❋ मोतिनके गलहार विराजैं ॥
संग सखी गण सहित हुलासू ❋ उडुगण महँ जनु चंद्र प्रकासू ॥
कोइ नाचहिं कोइ गावति आवैं ❋ कोइ वादित्र बजाइ रिझावैं ॥
कोइ विंजन कोइ चमर ढुरावैं ❋ कोइ जल कोई पानखवावैं ॥
कोइ घोरी कोइ चढी करेनू ❋ कोइ कर झांझ परवावज वेनू॥
करति कुतूहल मगमें बाला ❋ सुरसरि तटपहुँची तिहि काला
करि स्नान नेम निज पाली ❋ बिहरन लगी संग निज आली

दोहा-दिव्य सुगंधित बीचि वश, गुंजत भ्रमर सरोज ॥
बहत लख्यो तिहि गंग महँ, जेहि महँ रहा मनोज ५

चौ० तासु मरीचि विलोकि नवेली ❋ चकित चितइ कहलखहु सहेली
दिव्य अलौकिक वारिज एहू ❋ आनहु सखि लखिमोर सनेहू
एक सखी जल तरन प्रवीना ❋ आनि प्रवाह मध्यते दीना॥
बोली अपर सखी लखि कंजा ❋ है वह सखी तेज कर पुंजा ॥
सुनु सखि यह उपजत जेहि ठाहीं ❋ तहँ रविशशिगतिहोइकिनाहीं
अस सुनि ताहि प्रीति करिघ्राना ❋ तुरत सुबीरज नाभि समाना॥
तेहि न जान विधि करतब एहू ❋ अपर सखी जानै किमि केहू॥
संग सखी मुद सहित दुलारी ❋ विहरति सो निज भवन पधारी

दोहा--कह मुनीश सुनु नृपतिमणि, भावी अति बलवान
दीखे क्रमते गर्भके, लक्षण दोष निदान ॥ ६ ॥

चौ० पहिले मास भयो रजनाही ❋ दूजे अंग विपुल अति ताही ॥
तीजे चौथे मास नरेशा ❋ उदर बढत लखि भयउअँदेशा
पंचम रोम सोह कुच पीना ❋ छठे उदर अति बड लखि चीना
गर्भ जानि मन मिटा हुलासा ❋ नष्ट तेज भइ निपट उदासा ॥
परी शोकसागर महँ नारी ❋ घटत वारि जनु मीन दुखारी॥
रोवति लखि पूछैं सखि प्यारी ❋ कह किमि निजदुखराजदुलारी
किन तुम्हार कीना अपराधा ❋ का कछु कारज चाहहु साधा ॥
सुनत तासु गल गहि बहु रोई ❋ करौं कहा सखि अब कसहोई॥

दोहा--रविकुल कमल दिनेशरघु, सिंही सुत मोहिं जानु
भो पराग सम जन्ममम, सकुचैं सब जन मानु ॥७॥

चौ० सुभग सुयश कुल वृद्ध कमावा ❋ कुलकलंक मैं ताहि नशावा॥
अपयश होहि मोर अति भारी ❋ रवि कुल वन मैं भई छुठारी ॥
लखौ असंभव अकथ कहानी ❋ गर्भ अजाण रह्यो दुखदानी ॥
मोहिं शोच रघुकुल कर भारी ❋ तौ कछुदुख न जुहोति गमारी॥
किन्नर अमर असुर गंधर्वा ❋ अहि चारण विद्याधर सर्वा ॥

इनकी छाँह न पावहुँ देखन ❋ इनते नर कछु चतुर विशेषन ॥
सुनत वचन भइ विकल सहेली ❋ सूखि गई दाधी जनु बेली ॥
महिषी भवन गई तब सोई ❋ वंदि चरण पद गहि बहु रोई॥

दोहा--तब रानी कह चकितह्वै, कहु कन्या निज बात ॥
खेद खिन्न छबि छीन मुख,कस तवहृदयकँपात॥८॥

चौ०सुनत वचन बोली करजोरी ❋ विनती बहुविधि कीन बहोरी॥
कहेहु अभय जो पावहुँ माता ❋ तौ निज सकलसुनावहुँबाता॥
रानी कहेहु अभय तोहिं दीना ❋ भाषु यथारथ सब छल हीना॥
सुनत वचन करि विनय बहोरी ❋ सूख वदन बोली कर जोरी ॥
सुनिय मातु कहि जात सुनाहीं ❋ अति अचरज सुनि रोम उठाहीं
देव दनुज गंधर्व तमीचर ❋ यक्ष नाग चारण विद्याधर ॥
इनकी गति नहिं मंदिर जाके ❋ कहियमनुजकेहि विधितेहिताके
बाहिर राजसुभट बहुतेरे ❋ भीतर कन्या लाखक नेरे ॥

दोहा--सतमहलाबिचकुमारितव, रहतिसखिनसँगनित्य
तदपि दैव वश गर्भके, चिह्न देखियत सत्य॥९॥

चौ०सुनत वचन कन्याके रानी ❋ मूर्छित भूमि गिरी अकुलानी॥
विकल विहाल विलोकि सहेली ❋ पवन कीन जंघा शिर मेली ॥
बहुत जतन करि मूर्छा जागी ❋ बहुविधि शोच करनपुनिलागी
कन्यहि कीनबिदा तब रानी ❋ आपु गई रघुतट अकुलानी॥
चरण वंदि बहु विनय सुनाई ❋ मांगी अभय रहा शिर नाई ॥
कहा भूप मन तजहु गलानी ❋ दीन अभय सांची कहुरानी॥
सुनत रुदन करि वचन उचारा ❋ लखा भूप कछु भयहु बिगारा॥
कहेउ राउ पुनि कहसि न बाता ❋ बोली तवभयकंपित गाता ॥

दोहा-चन्द्रवती राउर सुता, कुल कलंक भइ सोइ ॥
देव अजानै गर्भ तेहिं,भा यह अचरज होइ॥१०॥

चौ०सुनतवचननृपबहु दुखमाना ❋ भयो वाम विधि मैं मन जाना
हा पापिन क़त कीन कुकरमा ❋ मेटि वेदपथ तजि निजधरमा॥

वधत पाप राखत अपवादू ❀ इहिविधि नृपमन शोचविषादू ॥
ताते सुता निकासन योगू ❀ संतत नीक यही कटु रोगू ॥
अस विचारि निज भृत्य बुलाई ❀ पुनिशिबिका बिच सुताचढाई॥
कहा सुनहु सेवक मम वानी ❀ चन्द्रवती कुल दूषण जानी ॥
महा बिपिन विच छाँडहुजाई ❀ दूरि जहाँ वृक गज हरि खाई॥
भलेहि नाथ कहितिनशिरनावा ❀ रोवति सो तेहिवन दिखरावा॥

दोहा-जाइ तजी तिन विपिन महँ, जहँ केहरि करिवास ॥
सो पितु आयसु लाज वश, तजत न भवन उदास ११
रोवति तिहि वनसो फिरै, हा विधि यह का कीन ॥
मनो मृगी चहुँ दिशि लखै, चकित यूथ विनुदीन १२

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायण-
विरचिते नासिकेतोपाख्याने चन्द्रवतीत्यागो
नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

वैशंपायन उवाच।

दोहा--तिहिवनमहँइकमुनिवसत, दया सत्य तपधाम ॥
विधिवश ते गमने तहां, समिध कुसुमफलकाम॥ १॥

चौ०-लैफलफूलसमिधमखसाजा ❀ निजथलचलेमुदितमुनिराजा
मारग बिच रोवति इक बाला ❀ शोक खिन्नचित निपटविहाला
लखि विस्मय वश कीन विचारा ❀ है विधिको यह अद्भुत दारा ॥
कै नल गौतमकी प्रिय वामा ❀ शची मेनका मन्मथ भामा ॥
कै तिलोत्तमा रमा घृताची ❀ रंभा हिमगिरिसुता पिशाची ॥
किन्नर नाग सुरासुर कन्या ❀ कै नृप सुता तदपि अतिधन्या॥
महा विपिन बिचकनक लतासी ❀ रोवतिफिरति दुखित छबिरासी
मेचक चक लखि भुजगभामिनी ❀ दशनपाँति लखिलजतदामिनी

दोहा--हियहारेहुधनु मदनकर, भ्रू लखि जासु कराल ॥
करन सीपतै सुभग अति, लोचन कंजविशाल॥ २॥

चौ०-मुखछबि पूरण शरद निशीशा ❋ पाक बिंब सम अधरमहीशा
राजै तिल प्रसून सम नाशा ❋ हास सुधाकर कर मद नाशा ॥
कंबु कंठ घन पीन पयोधर ❋ कंजकली लखि छिपे सरोवर॥
नव अशोक अंकुर सम पानी ❋ कटिलखिकेहरितियसकुचानी
दहिनावर्ति नाभि गंभीरा ❋ त्रिवलीयुत लखि मोहित धीरा
पीन मनोहर युगल नितंबा ❋ सघन जंघ जनु कदलीखंबा ॥
कोमलचरण अरुणजलजाता ❋ नखशिखजासुमनोहर गाता॥
इहि विधि ताहि निरखि सुखमाकर ❋ पूछा ताहि तबहिंकरुणाकर॥

दोहा--को तुम किहि कुल जन्म तव, कौन पुरुषकी जोइ
इहि वनमें आगमन किमि, सत्य कहो भय खोइ ३॥
मैं तापस इहि वन बसों, कंद मूल फल खाहु ॥
दया करौं सब जंतु पर, अरु हरि भजन कराहु ॥४॥

चौ०-इहिविधिवचनसुनतमुनिवरके ❋ विकलभईनृपतिहिउरकरके
लै उसाँस गंभीर विशाला ❋ बोली वचन सकुचि कर बाला ॥
का पूँछहु मुनि ज्ञान निधाना ❋ भावी प्रबल सकल जगजाना ॥
अब सुनु मम वृत्तांत मुनीसा ❋ कहहु तुमहिं गुनि जनक सरीसा॥
नहिं देवी नहिं नाग कुमारी ❋ मैं तो रघुकुल विपिन कुठारी ॥
कुलदूषकमोहिंविधिउपजावा ❋ जिहिनिजकुलकरसुयशनशावा
संग सखी नित लाख विराजैं ❋ भवन द्वार भट अगणित गाजैं॥
रह्यो अजानगर्भ दुखदानी ❋ सखिगण जननि जनककुलजानी

दोहा-तब रघु भूपति नीति निधि, बहु विधि कीन विचार॥
आन दंड नहिं दीन मुहि, तजत न लायउ बार॥५॥

चौ०-तब नृपसेवकसचिवबुलाये ❋ सभयविनीतनिकट चलिआये
भूपति कहेहु तिनहि समुझाई ❋ पुत्रिहि तजहु विपिन महँ जाई॥
तिन इहि वन महँ त्यागेहु मोहीं ❋ विधि वश भेट भई अब तोहीं ॥
अस कहि मुक्त कंठ ह्वै रोई ❋ दैव करै सु करै नहिं कोई ॥
करुणावचन सुनत मुनिनायक ❋ बोलेहुउचितसमयसुखदायक॥

पुत्रि तजहु मन शोच गलानी ❀ चलहु भवन शुभ करहि भवानी॥
अस कहि मुनि तिहि संग लिवाई ❀ निज आश्रम गमने सुखपाई ॥
पिताभवन इव निवसति बाला ❀ पूरेहु गर्भ गये कछु काला ॥

दोहा-भवन तजेहु तब लाज वश,रवि सन्मुख कर जोरि
कंप खिन्न गदगद गिरा, बोली करुणा बोरि ॥ ६ ॥

चौ० सुनु रघुवंश जलज हितकारी ❀ सब ठां गति सर्वज्ञ तुम्हारी ॥
जो कछु भयहु कर्म वश मोरे ❀ विनवहुँ तुमहिं नाथ कर जोरे ॥
जोप्रभु सकल भाँति मैं सांची ❀ मन वच कर्म न मन्मथ राची ॥
तौ करि दया देहु वरदाना ❀ दीनबंधुगुण तेज निधाना ॥
जिहि मग गर्भ अजान विराजा ❀ सो तुम सब जानहु दिनराजा ॥
तौ तिहि मग उपजै यह बालक ❀ जन्मत मैं न लखौं सुरपालक ॥
अस कहि मौन रही शिरनाई ❀ विधि वश ताहि छींक तब आई॥
नयन खोलि पुनि सन्मुख पेखा ❀ आगे सुठि निज बालक देखा ॥

दोहा--लै बालक मुनिपहँ गई, कहेहु सकल इतिहास ॥
सुनि मुनि हर्षित नाम किय, नासिकेतपरकास ॥ ७ ॥

चौ० इहिविधिपुनिमुनिभवनमझारी ❀ रही कछुकदिनराजदुलारी।
निशा दिवस रोवत नित जाहीं ❀ दैवहिं दोष देहि मन माहीं ॥
मुनि समीप निज सुतहि निहारे ❀ शोच सँकोच सहित मनमारे ॥
इहि विधि शोचति करति विचारा ❀ एक वर्ष कर भयहु कुमारा ॥
तजों सुतहि अस गुनि मन माहीं ❀ मंजूषा करि धरि तिहि माहीं ॥
बोली सुत तुम भाग्य विहीना ❀ कुल दूषण पापी यशहीना ॥
तुम्हरे हेतु हाल अस मेरा ❀ अपयशदुखपन सहेउँ घनेरा ॥
अस कहि डासि नवल दल राजा ❀ भलीभाँति मूँदेहु दरवाजा ॥

दोहा--कुश लपेटि दृढ़ बाँधि पुनि, गमनी संगम तीर॥
गंगा मुख ह्वै जोरि कर, बोली वचन अधीर ॥ ८ ॥

चौ० देव धुनी सुनु विनय हमारी ❀ जो मैं अबलगि अहहुँ कुमारी ॥
गर्भ रहेहु जिहि विधि दुख दानी ❀ जानत सो सब सारँगपानी ॥

है जिहि बीरजते यह बालक ❋ होइ तहाँ पहुँचे सुरपालक ॥
अस कहि सुरसरि मांझ पिटारी ❋ तजि मज्जन करि सुमिरि पुरारी॥
गमनी मुनि तट भूरि गमाई ❋ अब मुनि चारित सुनौ मनलाई॥
विधि वश सुरसारि मांझ पिटारी ❋ उलटि बही हरि कौतुक भारी ॥
उद्दालक मुनिवर तपधारी ❋ तिहि थलथमी विचित्रपिटारी॥
औरहु मुनिवर तिनके संगा ❋ करहिं विविधतप मज्जहिं गंगा॥

दोहा–कोउ श्रुतिपाठी नियम करि, कोइ वैशेषिक न्याय
कोइ षडंग वेदांत कोइ, लखैं ब्रह्म सदुपाय ॥ ९ ॥

चौ०कोइव्याकरणपढ़हिं मनलाई ❋ जेहि ते वर्ण अर्थ लिखिजाई॥
उद्दालक नित पढहिं पढावैं ❋ आपु करैं मख दान करावैं॥
कोउ समाधि साधहिं मुनि धीरा ❋ कोइ सहहिं पवनातपनीरा॥
ध्यावहिं एक ब्रह्म परवीना ❋ राग रोष मत्सर छल हीना ॥
भजहिं चतुर्भुज रूप अनूपा ❋ सुमिरतजेहि न परहिंभवकूपा॥
उद्दालक सह शिष्य उदारा ❋ गमने मज्जन सुरसरिधारा ॥
मज्जत जल बिच निरखि पिटारी ❋ शिष्यन सन बोले तपधारी ॥
आनहु वेगि विचार विहीना ❋ असकहिंगवन भवन तिनकीना

दोहा–सुर ऋषि पितरन पूजिमुनि, अग्निहोत्र पुनि कीन
तिन मंजूषा आनि करि, मुनि आगे धरि दीन ॥ १० ॥

चौ०मंजूषालखि चकित मुनीशा ❋ आगिलचारित सुनहु अवनीशा
करै विचार विचित्र निहारी ❋ विस्मय वश सब देखि पिटारी॥
सहित कुतूहल खोलेहु ताही ❋ तिहि महँ शिशुअद्भुत छबिजाही
धरेउ ध्यान तब ज्ञान निधाना ❋ निजसुत लखि सुमिरेहु वरदाना
तब मुनि ताहि गोदनिजराखा ❋ निज शिष्यन सन विधिवरभाषा
सुनहु सकल मुनि यह सुत मोरा ❋ कर्म प्रधान काल गति घोरा ॥
पुनि मुनिसुत मुनिभवन मँझारी ❋ रहन लगेहु सब भाँति सुखारी ॥
पढी सकल विद्या तिन कैसे ❋ समुझत नर संकेतहिं जैसे ॥

दोहा–कंद मूल फल अशन करि, पुनि तप कीन अपार

तोषेहु सुर गुरु जनक निज, हरि हर विविध प्रकार ११॥
यह चरित्र सुठि मोद मय पिता पुत्र संयोग ॥
सुनै पढै ते लहहिं यश, धन सुत रहैं निरोग ॥१२॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगभेजकविसत्यनारायण-
विरचिते नासिकेतोपाख्याने उद्दालकपिप्पलादाविरंचि-
सम्वादो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा–वैशंपायन कहेहु तब, सुनु जनमेजय भूप ॥
चंद्रवती जिमि पतिलह्यो, वर्णब कथा अनूप ॥ १ ॥

चौ०रघुनृपसुतावसतिवनमाहीं ❋ सुतवियोगछिनचितस्थितिनाहीं
मुनि आयसुमहि सुत हितबाला ❋ वनवन विचरति फिरतिविहाला
उद्दालकजिहि विपिन मँझारी ❋ वसहिं सहित सुतहियवसुनारी
गमनी तिहि थल शोच अलेखा ❋ तहँपुनि तिहि मुनिकर थल देखा
तिहि थल तट सुरसरिजल पासा ❋ खेलत सुतलखिलहेउ हुलासा ॥
बोली वचन विगत श्रम बाला ❋ कहुसुत यह किहिकी मखशाला
तुम्हरे जनक केर कहनामा ❋ कहहु वेगि सुनि लहौं विरामा
मैं सुत विरह फिरी वन भूरी ❋ ढूँढन सुत संजीवन मूरी॥

दोहा–विधिवश इहि थलतुमहिं लखि, गयो सकल श्रममोर
श्रवत उरज पय नैन जल, तात कर्म गति घोर ॥ २ ॥

चौ०इहिविधि चंद्रवतीजबभाषा ❋ नासिकेत बोले तजि माषा ॥
भद्रे सुनु मम जनक मुनीशा ❋ उद्दालक तप गुण तटिनीशा॥
यह थल तासु पुनीत सुहावा ❋ नाना मुनिखगमृगतरुछावा ॥
फल कुशफूल समिध हित लागी ❋ गयो आन वन सो बड़भागी॥
भइ अब तासु आगमन बेरा ❋ हमहुँ जाब नतु होइ अवेरा ॥
मखशाला लीपब अब जाई ❋ भाजन माँजि धरब शुचिताई॥
विना दार गुण ज्ञान अगारा ❋ करहिं उग्र तप नाम अधारा॥

सुनि सुत वचन बाल मृगनैनी ❋ बोली समुझि सुमुखिपिकबैनी॥

दोहा–सुनहु पुत्र मैं मातु तव, विधि वश भयोमिलाप॥
दास कर्म तुम कत करौ, मोरे सन्मुख आप ॥ ३ ॥

चौ०असकहिमुदितउठीतबबाला ❋ लीपी निजकरसब मखशाला
पुनि सुत वदन चूमि सुख पाई ❋ मज्जनहित सुरसरितट आई ॥
उद्दालक मुनि तब लगि आवा ❋ मखशालालखिअतिसुखपावा
सुतहि अंक भरि वदन निहारी ❋ बोले वचन मुदित तपधारी॥
भलि सँभारि लीपी मखशाला ❋ कबहुँ न तुमअसिलीपेहु लाला
अस कहि शिर सूंघा सुख पाई ❋ नासिकेत बोले शिरनाई ॥
सुनहु तात मुनि वर कुलदीपा ❋ आजु न मैं मख मंदिर लीपा
तव मंदिर लीपेहु मम माता ❋ सुनि उद्दालक पुलकेहुगाता॥

दोहा–कहहु पुत्र तव मातुकत, मिली कवन विधितोहिं
अहहिं कहां अब हालसब, वेगिबखानहु मोहिं॥४॥

चौ०नासिकेतसुनिनिजपितुबानी ❋ बोलेसकुचिउचितमृदुवानी॥
इहि थल मैं विहरत शुक संगा ❋ निरखत निर्मल गंग तरंगा॥
तब लगि आइ देखिमोहिं माता ❋ बोली पुलकित सुनु सुतबाता
को तव जनक कहाँ कहु नामा ❋ जो सुनि सन्तत लहहुं विरामा
कहेउ तुम्हार नाम तिहि काला ❋ मखशाला लीपन पुनि चाला
वरजि मोहिं तिन लीपेहु धामा ❋ गमनी सुरसरि तट गुणग्रामा॥
सुनि सुत वचन परम सुखपावा ❋ पुनिमुनिनित्यानियममनलावा
सुर ऋषि पितृ काम सब कीना ❋ ध्यान हेतु हरिपद मन दीना॥

दोहा–नित्य निबाहि बुलाइ सुत, कहेउ मातुपहँ जाहु॥
करि प्रसन्न फल फूल सन, ताहि भवन लै आहु॥५॥

चौ०नासिकेत गमने सुनि बानी ❋ सकुचि मातु सन बात बखानी॥
चलहुमात अबतिहि थल माहीं ❋ जहँ मुनीशममजनक रहाँही ॥
कन्द मूल फल भोजन करहू ❋ मैं सब करब जु तुम अनुसरहू॥
सुनत वचन रघुराज कुमारी ❋ सुत सन कहेउ शोचकरि भारी

बोलत कस न अजान सम्हारी ❀ रोम उठत अघ लागत भारी॥
मैं तव मातु भले तुम जानी ❀ ताते नहिं सोहति असि वानी॥
पिता पितामह अग्रज मामा ❀ इन सबकी वामा गुण धामा॥
उचित इनहिं नित कन्यादाना ❀ करहिं कि सुत जननीकर दाना॥

दोहा-तदपि चलब मैं संग तब, पुत्र जहाँ पति मोर॥
विधिहिं सुमिरि गमनी कहत, तात कर्म गति घोर ६

चौ०आवतसुतहिविलोकिसमाता ❀ मुनिपुलकिततनुमुदनसमाता
नासिकेत बोले करजोरी ❀ आई तात मातु यह मोरी॥
सुनत वचन बोले मुनि नाथा ❀ पूछहु ताहि नाइ निजमाथा॥
तासु जन्म निज जन्म कहानी ❀ तासुनामनिज नाम निशानी॥
कोपितुकिमिवनकीननिवासा ❀ किमितवविछुरनपुनिकिमिपासा
सुनत वचन मुनिके कर जोरी ❀ कहेउ मात सन सकुच न थोरी
नाम कहा निज वर्णहु माता ❀ वनआवनकिमिकिहिकुलजाता
जन्म हमार भयो किहि भाँती ❀ किमिमिलापबिछुरनकिहिराती

दोहा-बोली सुतके वचन सुनि, सुनहु तात मुदखानि॥
कथा सकल मम आदि ते, जोकछु भा दुखदानि७॥

चौ०-सुनुसुतअहहिं एकरघुराजा ❀ जासु सुयशतिहुँलोकविराजा॥
मैं दुहिता तिनकी मलखानी ❀ चलहिजासुअघअयशकहानी॥
एक लाख कन्या सँग मेरे ❀ पितुआयसु वशनिशिदिननेरे॥
तिन समेत नित गंग नहावौं ❀ पूजि गौरि हर निज घर आवौं॥
एक दिवस सुरसरि तट जाई ❀ मज्जनकरि हर्षी अधिकाई॥
तब लगि दृष्टि परेहु इक कञ्जा ❀ तेजराशि ढिग मधुकर पुञ्जा॥
चकित चितय चाहा मैं जबहीं ❀ तरन कुशल गमनी सुरसरिहीं॥
आनेहु मांझ धार ते कैसे ❀ अभिमत फल जननीते जैसे॥

दोहा-दीन मोहिं मैं प्रीतिकरि, सूंघेहु कुश निरवारि॥
गंगा पद नमि घरचली, पूजि गौरि त्रिपुरारि॥८॥

चौ०-गर्भ बढेहु कछुदिनगततोरा ❀ लखिविस्मयवशभामनमोरा॥

जननिहि कहेउसखिनलखिताही ❀ मातु कहेउ तब तुरत पिताही ॥
तिन सुनि क्रोधित दूत बुलाये ❀ तजन मोहिं वन तुरतपठाये॥
तिन मोहिं तजेहु महावन माहीं ❀ इक मुनिवर आवातिहिठाहीं ॥
तेहि फल फूल मूल कुश काजा ❀ सुता बोलि बोले मुनि राजा॥
चलु रहु मम आश्रम दुख टारी ❀ गईतदपिसकुचतिअतिभारी॥
गर्भपूर मूर्च्छा भइ छींकत ❀ लही न मैं तव जन्म हकीकत॥
हुइ सचेत सुत तुमहिं पठाई ❀ मुनिहिं वृत्त सब जाइ सुनाई॥

दोह–नासिकेत तिननाम किय,पुनि कछु दिवसबिताइ॥
मंजूषा करि तोहिं धरि, दीना गंग बहाइ ॥ ९ ॥
पुनि ढूँढन तव मोहवश, मुनिथल तजिकियगौन ॥
पावाइहि आश्रम तुमहिं,अस कहि साधीमौन १०॥

चौ०वचन सुनत जननीकेबालक ❀ कीनगवन जहँ मुनिउद्दालक॥
बैठे जाइ पाइ अनुशासन ❀ कहेहुसकुचि इतिहासपितासन
सुनिविस्मयवश धारेहु ध्याना ❀ सत्यवचनविधिकरतबजाना॥
हर्षे पुनि मुनि पुलकित गाता ❀ सुनुसुत तवशुचि साँची माता॥
तुम समातु निवसौ कछु काला ❀ मैं गवनब जहँ रघुमहिपाला ॥
अस कहि मुनि रघुनृपघर आये ❀ द्वारपाललखि नृपहिजनाये ॥
सुनत तुरत नृप बाहिर आये ❀ देखत मुनिहिं परम सुख पाये॥
दीपक पावक इव तनु भ्राजा ❀ चरण वन्दि मनहर्षित राजा॥

दोहा--आनि भवन निज कनक मय,सिंहासन बैठारि॥
चरण धोइ चरणोद लै, सींचेहुभवन सँभारि॥११॥

चौ०पूजन अर्घ्यादिक नृप कीना ❀ बहुरि प्रदक्षिण कीन प्रवीना ॥
आयसु पाइ बैठु पुनि आगे ❀ बोले नृप शुचि मन अनुरागे॥
सफल जन्म धन धाम हमारो ❀ मुनिवर दरशन लहततुम्हारो ॥
सफल क्रिया तप दान मुनीशा ❀ तवपद सरसिज नावत शीशा॥
सुनिय कृपालुविनयअविनाशी ❀ आवन हेतु कहिय सुखराशी ॥
सुनत वचन बोले उद्दालक ❀ तुमनृप महिसुर महिसुरपालक॥

होइहि अहहिं भये नृप केते ❀ तुम सम धन्य नहीं सब तेते ॥
ताते चिरजीवहु बडभागी ❀ संत विप्र हरिपद अनुरागी ॥

दोहा-दीने हय गज वसन मणि, तुम विप्रन बहु बार ॥
धाम धरणि धन धेनु बहु, प्रमुदितचित्त उदार॥ १२॥

चौ०मैं आपन अभिमत अब कहहूँ ❀ पूरणकरहु मोद मन लहहूँ॥
निज तनया दीजिय मोहिं सोई ❀ जाते मम सब कारज होई ॥
जिहि महँ सुतउत्पतिकरि राजा ❀ साधव निज कुलकाज समाजा
वचन सुनत कह नृप नय सानी ❀ है बड अचरज मुनि विज्ञानी॥
मोरे घर कन्या नहिं एकौ ❀ याचहु तुम सर्वज्ञ विवेकी ॥
सो सब कारण कहिय मुनीशा ❀ अस कहि चरण गहे अवनीशा
कह मुनि सुनु महीप मम वानी ❀ विधिकर लेख अमिट अनुमानी
को अस सबल चराचर माहीं ❀ कर्म रेख माना जिन नाहीं ॥

दोहा-सुनियभूप मनलाइ करि, जो कछु पहिलो हाल ॥
मोर मनोरथ सफलपुनि, कीजिय नृप तत्काल॥ १३॥

चौ०एकसमयकरिसुतकरकामा ❀ मैं गवनेहुँ सरसिज भवधामा
ध्यानासीनतिनहिंलखि भूपति ❀ बैठेहुँचरणवंदिकरिथिरमति ॥
नवत जानि विधि लोचन खोले ❀ दे अशीश आदर पुनि बोले ॥
कित आयहु मुनि मैं तब भाषा ❀ है सर्वज्ञ पुत्र अभिलाषा ॥
कहेहु मोहिं मन तजहु गलानी ❀ हँसेहु न जानि वृथाममवानी॥
पहिले सुत पुनि पीछे नारी ❀ मिलहि तुमहिं रघुराज कुमारी
पुनि पूंछा कारण मैं जबहीं ❀ अंतर्द्धान भये विधि तबहीं॥
मैं आवा आश्रम निज राई ❀ सुमिरहुँ तासु वचन मन लाई॥

दोहा-विधिवशताहीध्यानमहँ, खस्यो भूप ममरेत ॥
वारिज बिच धरि कुशनते, बाँधेहुँ यत्न समेत॥ १४ ॥

चौ०पुनि सो वारिज गंग नहावा ❀ विधिवशतवदुहिता सो पावा॥
सूंघेहु ताहि प्रीति करि जबहीं ❀ गयो उदरबिच बीरज तबहीं॥
भयहु गर्भ तब तुम वन दीना ❀ नासिकेत सुत भा विधिकीना

सो अब मम थल ससुत नरेशा ❋ सत्यमानिमन तजहु अँदेशा॥
शुद्धाचरण अहहि सो राजा ❋ दीजिय मोहि जानि ममकाजा
सुनि मुनि वचन चकितहुइराई ❋ रानिहि जाइ कहेउ समुझाई॥
करिसम्मत पुनि बाहिर आवा ❋ मुनिपदकमलसपदिशिरनावा
भक्तिसमेत कमल कर जोरी ❋ भूपति बोले वचन बहोरी॥

दोहा-सोकन्या तुम कहँ दई, सुनु मुनीश गुण ग्राम॥
ममरथचढिगमनौ तहाँ, आनु सुता मम धाम१५॥

चौ०रथचढिगमनकीनमुनिनाथा ❋ रथचढाइ लायहु सुतसाथा॥
रथबिच चंद्रवतिहि पहिचानी ❋ विस्मय विवशभई सबरानी॥
करहिं अचंभा नगर निवासी ❋ रघुभूपतिप्रमुदित सुखराशी॥
पुनि शुभ लग्न साधि नरनाहू ❋ चंद्रवती कर कीन विवाहू॥
उद्दालकहिं समर्पी कैसे ❋ हरिहि रमा जलनिधि दइ जैसे
दीन भूपसुत मुनि हित लागी ❋ चंद्रवती पति पद अनुरागी॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी ❋ धेनुसभूषण काम दुधासी॥
मणिमयभूषण कंचन केरे ❋ पट कौशेय जनित बहुतेरे॥

दोहा-दाइज दीन अनेक विधि, कीन विनय करजोरि॥
रथ चढाइसुतदंपतिहि, पठवन चले बहोरि॥१६॥

चौ०तब मुनिवर बोले हरषाई ❋ बहुविधि भूपहि दीन बडाई॥
किहिविधिवरणि कहौं नृप तुमहीं ❋ कन्यारतन दीन जिन हमहीं॥
इहिते अधिक कवन सेवकाई ❋ कारिय कवन विधि भूप बडाई॥
दीन जु दाइज नृप तुम भूरी ❋ धेनु वसन यह गज मणि रूरी॥
सो चाहिय भूपति कहँ राजन ❋ रहत तपोधन ऋषि कछु काजन
सुनि करि विनय भूप अनुरागे ❋ बड़ी दूरि लगि गे सँग लागे॥
फेरे मुनि भूपति वरजोरी ❋ निज आश्रमनियरान बहोरी॥
सुत वनिता धन सहित मुनीशा ❋ गंग तीर बसि भजु जगदीशा॥

दोहा-सुनु जनमेजय भूप यह, अति पुनीत इतिहास॥

कहत सुनत अघनशतजेहि, किय कविसत्यप्रकाश॥१७॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुडामणिलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने चन्द्रावतीविवाहवर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

दोहा-कह मुनीश सुनु भूप मणि, सुभग कथा यह सोइ
नासिकेत पितु शाप वश, यमपुर गे भय खोइ॥१॥

चौ०-सुनत वचन भूपति कर जोरी ❀ कहेउ नाथ हरु संशय मोरी॥
सुतहि शाप दीना किहि कारण ❀ यमपुर किमि गवने तपधारण
स्वर्ग नर्क देखे किमि जाई ❀ आइ सबहि किमि कहेउ बुझाई
सकल कहिय सादर मोहिं स्वामी ❀ परम कुतूहल अंतरयामी ॥
कह मुनीश सुनु भूपति बैना ❀ तात चरित मुद मंगल दैना॥
एक समय सोइ मुनि हरषाई ❀ सुतहिं बुलाइ कहेउ समुझाई॥
मुनिकुलजन्म पाइ तप कीजै ❀ हरिभजिज्ञानध्यानचित दीजै
असगुणि मम अनुशासन मानू ❀ अग्निहोत्र साधन सब आनू॥

दोहा-फूल मूल फल समिध कुश, आनु यज्ञहित तात॥
करब आजु नित नेम करि, एक पहर दिन जात॥२॥

चौ०सुनिपितुवचनविलंबनकीना ❀ पितुआयसुवशचलेहुप्रवीना
देखेहु सुभग विपिन इक जाई ❀ सुन्दर सर सोपान सुहाई ॥
नाना सुमन लता द्रुम फूले ❀ फलित मनोहर लखिमनभूले
नाना विहँग कहौं किमि गाई ❀ बोलत वचन श्रवणसुखदाई॥
शीतलजल शुचि सुधा समाना ❀ खिले कंजशोभितविधिनाना
कंजन पर मधुकर समुदाई ❀ बैठे गुंजत अति सचुपाई ॥
देखत इहि विधि विपिन तड़ागा ❀ नासिकेत कर मनअनुरागा॥
सर मज्जन कीना हरषाई ❀ सुर ऋषि हरि पूजे मन लाई॥

दोहा--विविध कुसुम फल आनि शुभ, पुनि पूजे त्रिपुरारि
ध्यान योग करि शुद्ध मन, सेयहु बहुरि मुरारि॥३॥

चौ०-धारेहुध्यानजबहिंइहि रीती ❀ मुनिहि भयेषटमासव्यतीती ॥
शोचेहु सुमिरि वचन पितु केरा ❀ आज्ञाभंग समुझि मन हेरा ॥
लैकुश फूल समिध थल गमने ❀ आगे सुनहु हाल भा जवने ॥
देखा मुनि आवा सुत जबहीं ❀ क्रोधित वचन कहा पुनितबहीं
रे बालक तैं का यह कीना ❀ करि विश्वासघात दुख दीना॥
एक घरी कर काज मँझारी ❀ वितइ दीन गुण ऋतु अविचारी
करतेहुँ होम जु पातेहुँ साधन ❀ रहेहुकहाँ मख काज नशावन॥
भयउ अकाज भरोसे तेरे ❀ सुर ऋषि पितर निराशे मेरे॥

दोहा-उद्दालक के वचन सुनि, नासिकेत कर जोरि ॥
विधि वश समुझावन लगे, उद्दालकहि निहोरि॥४॥

चौ०-तात कर्म बंधन यह नाना ❀ जन्म मरण दुखदायक जाना ॥
नर्क मूल पुनि संसृति मूला ❀ हरण मुक्ति नहिं सुख अनुकूला॥
योग सुगम भवसागर बेरो ❀ जिहिचढिनरभवतरहिं सबेरो ॥
शिवसरसिजभवमुनिसनकादी ❀ भयउ योग करि आतमवादी॥
सो नहिं बनत सदा पुनि सबहीं ❀ सो मैंकीन क्षमिय मुनि हमहीं॥
अससुनिमुनिपुनिसुतहिंबखानत ❀ शठ उत्तर देत न कछु जानत ॥
जे मुनि महाभाग हरि लीना ❀ अग्निहोत्र सबही तिन कीना ॥
जो नर होम करत तजि माषा ❀ ते न लहत कलमष श्रुति भाषा॥

सो०-सुनि पितुके वरवैन, नासिकेत हठ करि कहेउ ॥
भावी अति दुख दैन, टरै न टारे कोटि विधि॥५॥

चौ०-अग्निहोत्रकरफलनहिंनीका ❀ पुनिभवआवतमुनिकुलटीका
भोगत स्वर्ग होम वश जाईं ❀ जब लगि रहत पुण्य समुदाई॥
क्षीणपुण्य जब होत मुनीशा ❀ पुनि भवआवत अस मैं दीशा ॥
योग विवश तनु तजि तहँ जाहीं ❀ जिहि पद ते पुनि आवतनाहीं ॥
बोलेउ वचन सुनत करि क्रोधा ❀ उत्तर देत न श्रुति मग शोधा ॥
वदत झूंठ शठ हठ करि जोरी ❀ क्षमाकीन खल मैं बहु तोरी ॥
देखहु यमहिं शमन पुर जाहू ❀ दुराचार पुनि वदेहु न काहू ॥

जो न दंड देहौं शठ तोहीं ❀ श्रुति मरयाद तौ न पुनि होहीं॥

दोहा--नासिकेत धरणी गिरे,सुनि दारुण पितु शाप ॥
है प्रमाण उठि अस कहेउ, हृदय शोक संताप ॥६॥

चौ०--जाब नगर वैवस्वत केरे ❀ देखब तिन्हहिं वचनके प्रेरे ॥
सुतहि कहत अस देखेहु जबहीं ❀ शोक सनेह मगन भे तबहीं ॥
करि विलाप शोचत उद्दालक ❀ हा सुत पितु आज्ञा परिपालक
क्रोध विवश कछु रह न विचारा ❀ धरिय धीर विधि कवनप्रकारा॥
जहँ यम वसत तहाँ दुख भारा ❀ सुनियत नरक अनेक प्रकारा ॥
सेवक सुत पुनि प्रीतम मोरा ❀ किहि विधि देखब संसृत तोरा ॥
असविचारि गवनहुजनिताता ❀ दुखी होब हम अरु तव माता ॥
अस कहि बार बार उर लाई ❀ शोचत मुनिसुतलखि दुखपाई॥

दोहा-इहिविधि विलपत पितहि लखि,नासिकेतमतिधीर
करिय शोच जनि मोर मैं, तात जावँ यम तीर॥७॥

चौ०--जो नजायदेखबहमयमहीं ❀ आज्ञा भंग दोष लग हमहीं ॥
रविशशिउडुगणगगनप्रकाशत ❀ सत्यविवशमुनिश्रुति असभाषत
शेष धरत महि सत्य समेता ❀ सत्य प्रभाव अगिनि जल देता॥
सत्यधर्म कर मूल बखाना ❀ अश्वमेध शत सहस समाना ॥
वाजपेय मख सतनहिं तुलहिं ❀ सत्य हीन सुखस्वर्ग न मिलहीं॥
होत परमगति सत्य कहो तो ❀ नरक परत नरसत्यन हो तो॥
सोई सत्य समुझि मन माहीं ❀ तात जात मों श्रम पथ नाहीं ॥
धर्मराजके दरशन करिकै ❀ देखबचरण कमल पुनि फिरिकै

दोहा-अस कहिपितुपद बंदिपुनि,नासिकेताकियगौन॥
अंतर हित हुइमंत्रवश, पहुँचि गये जमभौन ॥८॥

इति श्रीमद्द्विजच्चुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने नासिकेतयमपुरगमनवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥५॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा-सुनहु रसापति शमनपुर, कथा यथा मुनिकीन॥
दुर्वासा गौतम गणप, सुमिरि नगर पद दीन॥१॥

चौ॰समवर्तीराजत निज सदसी ❋ दीपतिवीतिहोत्रछबिदरसी ॥
रविसुत रवि रवि छबि तनुभ्राजा ❋ कनक रतनमय पीठ विराजा ॥
विरखिप्रणाम कीन मुनिनायक ❋ देखत उठे मुनिहि वरदायक ॥
निज आसन बैठारि नरेशा ❋ पूजेहु अस लखिसबहिअँदेशा ॥
कुशल प्रश्न करि बहुविधितोषा ❋ वसु उपचारदुगुन कपिपोषा ॥
पुनि मुनिसुत बोले करजोरी ❋ विनती सुनहु नाथ अब मोरी॥
सादर मम पूजन तुम कीना ❋ यहप्रभु सबहि सिखावनदीना॥
अस आतिथ्य करै सब कोई ❋ नतरुदोषदुख भाजन कोई ॥

दोहा-विद्वज्जनशुचिसदसि तब, निरखिहोत मुद मोहिं॥
हुइ प्रसन्न कीजिय दया, इहिहित विनवहुँ तोहिं॥२॥

चौ॰जयजयधर्म्मपरमहितकारी ❋ अतुल तेजमहिमाअतिभारी ॥
जय तीनहुँ पुर पावन करता ❋ जगकरता भरता संहरता ॥
अधरम धरम विचारक देवा ❋ करत सुरासुर तव पद सेवा ॥
तुम प्रभु पितरनके वरनाथा ❋ शुचिमननिरखतकरतसनाथा॥
बहुतनुधरन शुभाशुभ रूपा ❋ दण्ड धरन श्रीधरन अनूपा ॥
मैं कृतकृत्य देखि तव पादा ❋ भयउँ नाथ तवचरण प्रसादा॥
अस विनती जब कीन मुनीशा ❋ शमन प्रसन्न भये अवनीशा ॥
निजमन धर्म मुनिहि अनुमाना ❋ तपगुण तेज धामखलुजाना ॥

दोहा-यह अस्तुति मुनि तनयकृत, पढैंसुनैं जो नित्य॥
ते सुकृती नरक न लखैं, यम तुष्टैं कवि सत्य ॥३ ॥

चौ॰सुनिविनतीमुनिकृतयमराजा ❋ बोलेमुनिआयहुकेहिकाजा॥
कह मुनि सुनहु दंडधर वानी ❋ जनक शाप दीना सुखदानी॥
पुनि पूँछा किमि पितु कर शापा ❋ वरणी कथा छाँडि छलदापा॥
सूरसूनु तुष्ट सुनि बैना ❋ धनिपितुवचन निरत सुखदैना।

लखेहु मोहिं गवनहु पितु पाहीं ❀ तात रहन बेला तव नाहीं ॥
पुनि कह धर्म वचन अनमोले ❀ मांगहु वर सुनि मुनि पुनि बोले
सुनहु विनयसबविधि सबलायक ❀ देहु कृपाकरि यह वरदायक॥
निजपुर सकल दिखावहु सोई ❀ जिहि ठां दुरित सकृत कृतहोई॥
दोहा-कौन पुण्य करि करत नर, कौन स्वर्गमें अयन ॥
नरक कौन किहि पापते, मैं देखब निज नयन ॥४ ॥
चौ० चित्रगुप्तलेखक जहँ भ्राजा ❀ कौतुक सहितलखबयमराजा॥
त्रिहँसि कीन प्रमान मुनिबानी ❀ शुचि किंकरन कहेउमुनि ज्ञानी
सुनहु भृत्यगण यह मुनिबालक ❀ सत्य धर्मरत शुचिपथ पालक
जनक शाप वश इहि थल आवा ❀ ममपुर लखनचहत शुचिभावा
स्वर्ग सुखद दुखदायक नरका ❀ सकल दिखावहुताजिमनतरका
सादर चार वचन सुनि आये ❀ चित्रगुप्तके भवन सिधाये ॥
दूतन कहेउ द्वारपहिं जाई ❀ भेजा हमहिं समुनि जमराई॥
तुम निज पतिहि कहौ समुझाई ❀ हमहिं सुनाहु वचन तिहिं आई
दोहा-द्वारप सुनि गवने कही, चित्रगुप्त सन जाइ ॥
द्वारे मुनियुत धर्मगण, ठाढे कवन रजाइ ॥ ५ ॥
चौ० चित्रगुप्त सुनि हृदय विचारा ❀ आवन कहेउ समुनि पुनिचारा
पति आयसु तिन तिनहिसुनावा ❀ ते भीतर गमने सचुपावा ॥
चित्रगुप्त लखि मुनियुत चारन ❀ कहेउ कहहु निजआवनकारन
बोले चार उचित सुखदानी ❀ नाथ कहेउ यमपति अस वानी
सत्य धर्म रत मुनिसुत एहू ❀ जनक शाप मम नगर लखेहू॥
इहिकर मन वांछित तुम पूरहु ❀ यह मम वचन जानि उर फूरहु
दूतवचन सुनि मुनिहि निहारी ❀ सादर पूजेहु मनहु पुरारी ॥
पुनि कह कहहुजु भावति जीका ❀ करबसमुद नहिं कहहु अलीका
दोहा-चित्रगुप्त सन कहेउ मुनि, तुम सर्वज्ञ सुजान ॥
धर्म्माधर्म विचारकर, धर्म तुल्य मति मान ॥ ६ ॥
चौ० मैंकृतकृत्यचरणतवनिरखत ❀ असकहिमुनिपुलकेपुनिहरषत

जानत भाव चराचर जीके ❀ मम अन्तर्यामी पुनि नीके ॥
मैं कछु पूछब यम अनुशासन ❀ देखबपुनि सोइकहब पितासन
सुनहु भूप जब मुनि इमि भाषा ❀ तिनपुनि तासु वचन शिरराखा
मुनि सुकृती सेवक बुलवाये ❀ दैअस आयसु सकल सिखाये
कष्टद नरक सुखद सब स्वर्गा ❀ दिखरावहु दुख सुख कर बर्गा
मुनिहि न दुष्ट दरश दुख होई ❀ लगै न दुष्ट पवन तन कोई ॥
सकल दिखाइ लाइ इहि ठाहीं ❀ चले चार मुनि हर्षि सिहाहीं

दोहा-दूतन विप्रहि चित्र सब, दिखरावा छिन माहिं ॥
लखिहर्षित मुनि गवन किय, चित्रगुप्त जेहिठाहिं ७

चौ०चारन आइ शीशनिजनावा ❀ कहेउ नाथपुर सकल दिखावा
दूत वचन सुनि कह शुचि वैना ❀ लै गवनहु यमनिकटसुखैना ॥
माथ नाइ गवने मुनि साथा ❀ आइ धर्म पद नावउ माथा ॥
मुनिहि लखतयम अति हरशाना ❀ पुनि निजआसनदेसनमाना ॥
अर्घ्यादिक दिकरस उपचारा ❀ पूजि धर्मपति वचन उचारा ॥
इहि ठां आइ कवन सुख पावा ❀ किमि तुमलखेउ नगर मनभावा
लेखक चित्रगुप्त कस देखा ❀ स्वर्ग नर्क निरखे किहि लेखा
बोले नासिकेत सुनि वानी ❀ भक्ति विवेक नवनि नय सानी

दोहा-सकल लख्यो प्रभुपद कृपा, स्वर्गनर्ककरभेव ॥
पितु पद पंकज लखब अब, होइ रजायसु देव ॥८॥

चौ०-बोले यम गवनहुपितुपाहीं ❀ अजर अमर तनु जगत पुजाहीं ॥
होई अक्षै तप योग तुम्हारा ❀ यह मुनिवर वरदान हमारा ॥
अस सुनि चरण बन्दि करजोरी ❀ गवन कीन निज थलहिंबहोरी
मन्त्र प्रभाव सपदि मुनि आवा ❀ पितुपद निरखिहरषिशिरनावा
उद्दालक सुत शोक न दीसा ❀ डूबत जनु उधरे जगदीशा ॥
चन्द्रवती सुत विरह दुखारी ❀ बीतेहु सो सुत वदन निहारी ॥
जननि जनक पदजब मुनि वन्दे ❀ मेटि सकल दुख होत अनंदे ॥
सुतमुखनिरखतमुनि हरषाना ❀ जप तप जन्म सफल तब जाना

दोहा--बडीबार लगि लाइ उर, आपुहि निंदेहु भूरि ॥
चख जल सुत तनु सींचि कह, हे सुत जीवन मूरि॥९॥
चौ० भेंटीसुत रघुजा सुखपाई ❀ सुखी वत्स सुरभी जिमि पाई ॥
पुनि मुनि सुतहि निकट बैठारी ❀ कहेउ कि सुनु सुत आज्ञाकारी॥
निरपराध तुहि यमपुर भेजा ❀ उर दुख भा विनशा मम तेजा ॥
ज्ञान न रहेउ कोप वश मोहीं ❀ ताते शाप दीन सुत तोहीं ॥
अब मम सुकृत फला मैं जाना ❀ नहिं तुमसम जग नर बलवाना॥
यमपुर गवनि बहुरि को आवा ❀ सुनेहुँ न जग असतेजप्रभावा॥
अस कहि सुतसह बैठि कुशासन ❀ पूछेहु सुतहि धर्म अनुशासन॥
कस यमपुरपथ पुर पुनि कैसा ❀ पुरकर वृत्त कहहु सब जैसा ॥
दोहा--नरक स्वर्ग बिच किमि लखे, पापी धरमी दोइ ॥
यम गण तनु लेखक सभा, वर्णहु जस जहँ होइ१०॥
चौ० सुनतवचननमिपितुपदकंजा ❀ कहेउ कि सुनहु तात मुदगंजा
अति दुस्तर यमपुर पथ माना ❀ तवप्रताप मैं जात न जाना॥
लखेहु धर्मपति अद्भुतरूपा ❀ ज्वलितदहनछबिअकथअनूपा
विविधरूप यमदूतन केरे ❀ अति विकराल जात नहिं हेरे॥
चित्रगुप्त मतिमान बिलोके ❀ स्वर्ग सुखी सब रहत अशोके॥
कष्टत निरय अनेक प्रकारा ❀ सहत कलेश दुरित कृत भारा॥
मैं करि विनय जात यम तोषा ❀ तिन मोहिं पूजि मानदै पोषा॥
अजर अमर अस वर पुनि दीना ❀ तवपदनिकट बिदा तब कीना
दोहा--मैं नवि यमपति पदपदम, बर लहि कीन पयान॥
आइ कमलपद लखि भयो, जप तप पुनफलवान११
सुनु भूपति यह चरित जो, कहहि सुनहि चित शुद्ध ।
नरक न परशै सत्य कवि, यमगण होइ न क्रुद्ध॥१२॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने नासिकेतपुनरागमवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा-विस्मय वश सब जन भये, सुनि नृप यह इतिहास
गवनि शमनपुरपुनिफिरे, मुनिसुतपरमहुलास ॥१॥
सुनै सु गवने दरश हित, भीर भई मुनि गेह ॥
बहु नर नरपतिविप्र मुनि,मुनिपद रखत सनेह ॥२॥

चौ०कोइ मुनि एक भक्तव्रतधारक ❀ पयाहार त्रिदिनाशंन कारक॥
कोइ पंचाह सात दिन वादी ❀ करहि फलाशन तजि कामादी॥
कोइ यक पक्ष वादि जल खावै ❀ कोइ इक मास उपास करावै ॥
कोइ मुनिअयनबितइजललहहीं ❀ कोइकवर्ष वादि फल गहहीं ॥
जल बसि पंच अग्नि तप कोई ❀ निजशिर जलधारा धर कोई ॥
ऊरधपद कोइ ऊरधबाहू ❀ अधोऊपन मुख ऊरध काहू ॥
कोइ निरंतर रविहि निहारहि ❀ करहिकष्ट निज दुरितविडारहि
कोइ करि प्रानापान समाना ❀ प्राणायाम निरत सुखमाना ॥

दोहा-कोइ पवनाशन करत मुनि,कितेक भखत जलपात
एक पाद आधार तप, करत उग्र कृश गात ॥ ३ ॥

चौ०वैष्णव शाक्तरुसौर गणेशा ❀ पूजहिं छल तजि बहुतमहेशा॥
ब्रह्मचर्य रत कोइ मुनि योगी ❀ करहिं परम तप हरिपद भोगी॥
कोइ मुनि अग्निहोत्र व्रतधारन ❀ कृच्छ्र पराकनिरत हरि कारन॥
चांद्रायण व्रत करत अनेका ❀ निराहार निर्जल तप एका ॥
इहिविधि बहु मुनिवर तहँ आये ❀ नासिकेत सादर बैठाये ॥
धन्य धन्य ध्वनि सकल पुकारैं ❀ नासिकेत मुखचंद्र निहारैं ॥
तिन महँ जे मुनि परम प्रवीना ❀ कथा रसिक हरिपद मनलीना
यमपुर वृत्त सुनन चहँ ज्ञानी ❀ नासिकेतसन कह मृदुवानी ॥

दोहा-उद्दालकसुत तेजनिधि, सबहि कहहु समुझाइ ॥
जस कछु भुगतत यमनगर, मनुज शुभाशुभजाइ ४

चौ०कस पथ तुमगवने किहिभाँती ❀ कसयमपुरयमगणतनुभाती॥
करतब रहनि कहहु तिन केरी ❀ काऊपाश मुद्गर किमि हेरी॥

किमि नर निवसत सुखी विषादी ❀ अनृतपुरुषरत शुचिप्रियवादी ॥
धर्मी कत कलुषी कत जाई ❀ रहत कहहु मुनिवर समुझाई ॥
विविधाकार दंड धर रूपा ❀ सकल कथा यह कहहु अनूपा ॥
तप व्रत दान नियम उपकारा ❀ ब्रह्मवधादिक दुरित अपारा ॥
निशि दिन करत मनुज सब देवा ❀ हमहू कबहुँ लखब यह भेवा ॥
करहु कृपा यह चरित सुनावहु ❀ हरहु कुमति उर सुमतिजनावहु

दोहा--यमशासनमें जाब सब, काल विवश भयभीत ॥
सुखद हिताहित करि दया, वर्णहु कथा पुनीत ॥ ५ ॥

चौ॰ नासिकेतसुनिवचनउचारा ❀ नविपितुमुनिपदविविधप्रकारा
सुनहु सकल मुनिवर द्विजराई ❀ यमपुर वृत्त कहब समुझाई ॥
दीनामोहिं जनक जब शापा ❀ चलेउ चरणनविशुमिरि प्रतापा
जात यमहिं तोषा विनती करि ❀ तिन आतिथ्यकीन पूजाकिरि ॥
पुनि प्रसन्नहुइ अस वर दीना ❀ अजरअमरतनु निरुजनदीना ॥
पुनि सब नगर लखा मैं जाई ❀ आयसु लै देखे पद आई ॥
सुनहु सकल मैं यमपुर देखा ❀ योजन सहस मान तिहि लेखा ॥
योजन पाँच ऊँच पुरभीतैं ❀ चौपथ चारि द्वार परतीतैं ॥

दोहा-नाना जन नाना रतन, अद्भुत रूपनचात ॥
सब द्वारन पर कुतुकअस, गावत यंत्र बजात ॥ ६ ॥

चौ॰ दक्षिण द्वार नरकबहुतेरे ❀ निजगणसहित धर्म तहँहेरे ॥
सभा मध्य अति भाधर राजत ❀ कनक रत्नयुत पीठविराजत ॥
बहु ऋषि सिद्ध सुरासुर सर्वा ❀ चारण यक्ष साध्य गंधर्वा ॥
विविध महोरग पुनि विद्याधर ❀ अप्सरगण सेवत पद सादर ॥
पुरभीतर जस हेरेहु जाई ❀ सो सब सुनहु सकल मन लाई ॥
जे प्रविशहिं पूरब दरवाजा ❀ तिनहिं प्रथम सुनिये मुनिराजा
जे छलतजि सेवत गिरिजेशा ❀ सुरभि तपन जल देत हमेशा ॥
कंबल कंचुक हिम ऋतु दाना ❀ वह्नितपावत शिशिर सुजाना ॥

दोहा-अन्न छाँह पावस शरद, देत परम सुखपाइ ॥

विप्रपथिक थकि सुख लहत, जेहि दर तरुतर जाइ ७
ते पूरब दरवाजमें, प्रविशहिं नर सुख पाइ ॥
अब उत्तरके कहहुँसब, सुनहु सकल मन लाइ ॥ ८ ॥

चौ०स्वागतकहहिंलखहिंजनआवत ❀ काहुहिकबहुँनजानिसतावत
अनुदिन व्रत तीरथ असनाना ❀ बिगत कोप अति लोभ नआना॥
सादर छल तजि सहित उछाहू ❀ हरि गुरु सेवत जननि पिताहू॥
पूजन करत अतिथि कर जोई ❀ निज अनुमान न विमुखेउ कीई॥
मन वच तन धन सकल लगाई ❀ सेवत विप्र चरण सचुपाई ॥
हरि सुर भक्त दीन संन्यासी ❀ सेवत इनहिं मरत पुनि काशी ॥
सुर सुरभीगृह सुरसरि तीरा ❀ तजत जे सजत न तन अतिधीरा
सप्त पुरी तीरथ परयागा ❀ तनु तजि जात उतर दर नागा॥

दोहा--परतिय धन अपवाद पुनि, करत न अंगीकार ॥
सत्य धर्मरत नियम कर, प्रविशहिं पश्चिमद्वार ॥९॥
लहि विमान भूषण वसन, शुचि सेवक वर भोग ॥
जात तीनिहूँ द्वार हुइ, धर्मी हरि हर लोग ॥ १० ॥

चौ०-सुनहुसकलदक्षिणदरबारा ❀ लहतमनुजदुखविविधप्रकारा॥
दुष्टातमा विगत भय शीला ❀ पुरुष असत्य निरत दुःशीला॥
निगमागम पुराण गुरुदेवा ❀ निंदहिं जननि जनक तजिसेवा
ते दक्षिण दर प्रविशहिं सबहीं ❀ उग्र कुरूप घोर गति लहहीं ॥
देखि देखि गण रूप करारा ❀ अगिनित हाहाकार पुकारा ॥
बाँधि दंड यमगण लैजाहीं ❀ मुद्गर लोहदंड हनि ताहीं ॥
परतिय गुरुरवनी रत कन्या ❀ निज तियतजिसेवतनरअन्या ॥
डारहिं घोर नरक महँ तिनहीं ❀ दक्षिण द्वार लखामैं जिनहीं ॥

दोहा--तहाँ लखे मैं नरकबहु, निरखत रोम उठात ॥
सुनहु सकल मनधीर मैं, अजहुँ कहत भय पात ११
कुंभीपाकादिक नरक, पापिनको दुखदानि

गेरत यमगण भीम तनु, यथा योग पहिचानि ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने यमपुरवृत्तान्तवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा-पुनि ऋषि बोले प्रीतिकरि, सुनु मुनीश अभिराम॥
हम सब पूछहिं ताहि पुनि, वर्णिय सद्गुण धाम॥१॥

चौ०जीवत मद पीवत जिमि चातक ❋ मारतमहिसुरसुरभीघातक॥
मातहि पितहि हनत मल खानी ❋ लहत कवनगतिकहहुबखानी॥
मातहिं सुतहिं हतहिं जे पापी ❋ गर्भघात कर जन परितापी ॥
जे विश्वासघात कर लोका ❋ ते नर किमि भुगतैं करि शोका॥
हतहिं जे बालहि वृद्धहि भाई ❋ जे परदोष सुनत कर गाई ॥
जे परतिय लंपट अति कामी ❋ तिनकी गति वर्णियपुनिस्वामी
जे गुरुनिंदक गुरुतिय गामी ❋ गुरु तल्पग पुनि घातक स्वामी
करहिं जे ब्रह्मचर्य नर भंगा ❋ हतहिं वेणु ध्वनि मोहि कुरंगा॥

दोहा-जे स्वदत्त परदत्त नर, फेरि लेहिं पुर धाम ॥
भूमि धेनु हय वसन गय, जान तडागाराम॥ २ ॥

चौ०लेहि चुराइवस्तु महिसुरकी ❋ सीमा भंग करै पर पुरकी ॥
सुभगाचार निरत जो तीया ❋ ताहि छाँडि सेवत परकीया॥
जे विष देत कूट पर साखी ❋ पर हित घृत बिगारवनिमाखी
जे पर सुख लखि मन बिलखाई ❋ पर दुख देखि बहुत हरषाई॥
जे भूपहि निंदहि निज धर्महि ❋ जेनरनिशिदिननिरतकुकर्महि
जे तिय पति आयसु रत नाहीं ❋ परपति प्रेमपगी सुख चाहीं ॥
व्यसनासक्त चित्त जन केरा ❋ कहत झूठ करि यत्न घनेरा॥
सुर मंदिर धन हरहिं अभागे ❋ परअनहितहितनिजतनुत्यागे

दोहा-दुराचार छेदैं विटप, दुष्ट संग रत जोइ ॥
सुनी न सादर हरिकथा, तिनकी का गति होइ॥३॥

गुरु सिखवन जिन नहिंसुना, सहेउ न द्विज गुरु क्रोध
कीन संत सनमान नहिं, वरणहु तिन हित बोध॥४॥
औरौ बहुतक पाप रत, तिनहिं कहो मतिधीर ॥
कहां जाइ किहि विधि रहत, सहतकवनविधिपीर५

इति श्रीद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने दुरितकृतप्रश्नवर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

वैशंपायन उवाच ।

दोहा–इहि विधि नृप जबसकलमुनि, पूछिरहे शिरनाइ
नासिकेत करजोरि कह, सुनहु समुद ऋषिराइ॥१॥

नासिकेत उवाच ।

चौ०सकलसुनहुयमपुरइतिहासा ❋ अतिअद्भुतसुनिबढहिंहुलासा
पूरण आयु होति है जिनकी ❋ धर्मराज मन चिंता तिनकी ॥
पठवत किंकरगण यमराई ❋ ते जग आवत आयसु पाई ॥
जीवहिं बाँधि डाटि बरजोरी ❋ लै गमनत यमनिकट बहोरी॥
ठाढ करत यमसदसि मँझारी ❋ मुनिगण जहाँ विराजत झारी॥
जातूकरण कृष्ण द्वैपायन ❋ सनतकुमार ब्रह्म पारायन ॥
भरद्वाज गौतम दुर्वासा ❋ भासुर क्रतु हारि मित्र प्रभासा॥
दीधिचि भृगु पुलस्त्य संवर्ता ❋ मुनिमांडव्य उग्र तपकर्ता ॥

दोहा–विश्वामित्र सुमित्र पुनि, याज्ञवल्क्य योगेश ॥
गालव अत्रि मरीचि सब, राजत यथा दिनेश॥२॥

चौ०ये सब अपर महा मुनि झारे ❋ मैं निज नैनन सकल निहारे ॥
धर्मशास्त्र श्रुतिसुख मीमांसक ❋ न्याय वेद वेदांत प्रकाशक ॥
धर्माधर्म विचारत नीको ❋ सबमिलिन्यायकरत करनीको
चित्रगुप्त कर सम्मत पाई ❋ धर्मराज सन कहत बुझाई ॥

त सुनि दूतन कहत जनाई ❋ यथा योग भुगतावौ जाई ॥
धर्मराज जब सुकृति न हेरत ❋ शुचि सुन्दर दूतन तब टेरत॥
कहत इनहिं बिलसावौ स्वर्गा ❋ अर्थ धर्म अभिमत सुख वर्गा
ये सुकृती श्रुतिपथ चलि आये ❋ हमतुम धन्य इनहिं लखिपाये

दोहा–पापी मनुजहि निरखि यम, दूतन कहतरिसाइ ॥
रौरवादिकी यातना, इनहिं भुगावौ जाइ ॥ ३ ॥

चौ०सुनत वचनयमगणयमकेरा ❋ त्रास दिखावत नरहि घनेरा॥
लोहदंड मुद्गर हनि कोपहिं ❋ रौरवादि महँ पापिनु तोपहिं ॥
इहिविधि धर्म सदसिके हाला ❋ अब विस्तरते सुनु महिपाला॥
चित्रगुप्त सन दूत मिलावत ❋ ते पुनि नरकर कलुष विचारत
जाति ब्रह्म वध पाप कराला ❋ पुनि पठवत यम तट ततकाला
देखि धर्मपति द्विज घातिन को ❋ दूतन कहत जाहु लै इनको॥
कुंभीपाक मांझ लै डारहु ❋ मुद्गर परिघ मारु बहु मारहु॥
इन रिस कारि मान्यो महिदेवा ❋ सुनी न मम अनुशासन भेवा॥

दोहा–इहिविधि सबकर पाप कहि, यमअनुशासनदेत
भुगतावत सब नरक जिमि, सो सबसुनहुसचेत ॥ ४ ॥

चौ०रौरव माँझ पचै गो घाती ❋ मैं निरखे निज नैन कुभाँती॥
जो तिय मारहिं गर्भ गिरावहिं ❋ तेलयंत्र तनु तासु पिरावहिं ॥
जिन गुरु हन्यो हतेहु निजस्वामी ❋ क्षुराधार ते पीडित नामी ॥
जे विश्वासघात नर करहीं ❋ ते नर कालसूत्र महँ परहीं॥
हरत जु शिशु वृद्धनके प्राना ❋ तप्ततेल महँ पचत अजाना॥
जे पर खेत हरहिं परदारा ❋ जे नर परपुर सीम बिगारा॥
ते गुडपाक नरक महँ पचहीं ❋ हाहाकार शब्द तहँ मचहीं॥
चक्रन ते तिनके तनु छेदहिं ❋ मुद्गर परिघ मारि दुख देवहिं॥

दोहा–मूढ अगम्यागमनरत, भक्ष्याभक्ष्यहि खात ॥
तिनके तनकहँ क्रकचगण, छेदत हैं दुखदात ॥ ५ ॥

चौ०चोर वृत्ति कारि जीवत जेई ❋ बिन कारण परद्रोह करेई ॥

बोलत अनृत पिवत मद पापी ❋ जे परनिंदक जन परितापी ॥
ठौर भयंकर मांझ अपारा ❋ यमगण तिनहिं देत बहु मारा ॥
जे नर कन्यादान मँझारी ❋ विघ्न करत रौरव अधिकारी ॥
दान देत लखि भाँजी मारहिं ❋ ब्रह्मचर्य्य व्रत पर कर टारहिं ॥
परतप महँ करु विघ्न अनेका ❋ सुनत न हरियश पाइ विवेका ॥
हरि यश कहतसुनत बिचलावहिं ❋ पर बिगारकहँ चित्तचलावहिं ॥
प्रथम भखैं तिनके तन कूकर ❋ पुनि असिपत्रमांझ अतिदुखभर

दोहा-एक वर्ण हू देत जो, सो गुरु यह श्रुति भाष ॥
तिनहिं न मानत मनुज ते, रौरवकी अभिलाष॥६॥

चौ०जे नर हरत दीनके प्रानन ❋ मित्रहि मारत दाहत कानन ॥
तिनहिं अँगार न माँझ लुढावें ❋ यम गण दारुण त्रास दिखावें॥
जे गुरु धनहारक संसारा ❋ कृमिसंकुल महँ परत निहारा॥
जे नर नृप हुइ पाप कमावत ❋ प्रजा विवाद न जानि चुकावत॥
युक्त अयुक्त न जानत जोई ❋ करत सपक्ष न्याय शठ कोई ॥
ते नर मैं कर पत्र मँझारे ❋ गिरत लखे पावत दुख भारे ॥
बिन देखे परदोष गिनावैं ❋ यमगण तिनके नैनकढावैं ॥
अप्रिय बात सुनावत जोई ❋ करना छेद परत नर सोई ॥

दोहा-भूसुर सुर धन हरत जे, लोभी मनुज अजान ॥
ते सूची मुख नरक महँ, गेरे जात सुजान ॥ ७॥

चौ०जेपरतिय अभिलाषत प्रानी ❋ निंदत गोसुर भूसुर जानी॥
धर्मशास्त्र तीरथ हरिजन कर ❋ निंदाकरतसुनहु दुख तिनकर ॥
पहिले शूलन पर बैठारी ❋ देहिं परिघ मुद्गरकी मारी ॥
पाछे काक श्वान तिनके तन ❋ छेदत दुखत निहारबनतन ॥
भोगी बहुत काल प्रियनारी ❋ त्यागततादि अधम अविचारी
सो करपत्र माँझ दुख पावत ❋ कहौं कहांलगि को कहिपावत
कर पद बंधन साँकरि केरे ❋ यमपुर अधम बहुत मैं हेरे॥
दूत शमन अनुशासन पाई ❋ नरकन मांझ गिरावत जाई॥

दोहा--चित्रगुप्त शुभअशुभ सब, लिखतमनुजकरनित्य॥
तिहि वशदुखसुख मिलतहै, वृत्त कहतकवि सत्य॥८॥

इति श्रीमद्द्विद्कुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणाविरचिते
नासिकेतोपाख्याने नरकवर्णनं नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा-अपर सुनहु मुनि सकल मैं, वरनब सहित सनेह ।
अद्भुत यमपुर वृत्त सुनि, रोम उठहिंगे देह ॥ १ ॥

चौ०-भूमि ताम्रमय मैं तहँ देखी ❀ तातल पावक जुलत विशेखी॥
दहति दहन वश सो महि कैसी ❀ अति दुस्सह प्रलयागिनि जैसी
तहँ नर कलुष जनक दुख पावें ❀ यमगण हनि तिहिं माँझ जराबैं
खर नख खर रद नभ कच केते ❀ खर रोमा सूचीमुख केते ॥
अतितनु कृशतनु लहिसबपापी ❀ तहँ दुखपावत जन परितापी ॥
साँकरि बाँधि बाँधि गज लावें ❀ अतिदृढ मुद्गर हनि तहँ ढावें ॥
दुखलखि जब इत उत नर धावें ❀ यम गण धरि तिहिंमाँझ गिरावें
पुनि निज कृत कारि यादि करावें ❀ परिघन हनि बहु त्रास दिखावें॥

दोहा--लोह थंभ तिहि माँझ बहु, जुलत जुलन वश सोइ॥
तेहि भेंटत दुख लहहिं नर, परतिय गामी जोइ ॥२॥

चौ०-यमगणताहिमारिभेंटावत ❀ परुष वचन पुनि तिनहिंसुनावत
तब तौ तन मन सकल बिसारी ❀ प्राण समान चहीं परनारी ॥
अब किन भेंटहु रुचि कारि एही ❀ तब सुख लहेउ जरति अब देही॥
उन्नत कुच भुज भरि जिमि भेंटे ❀ मुख चुंबन रति कारि दुखमेटे ॥
रही जु तव जींवन जल नारी ❀ यह सोइअपर न करहुचिनारी॥
भुजभरि अंक रहेहु रति विहरत ❀ अब कत हृदयपंक जिमिविदरत
कल न परीजिनविनतोहिपापी ❀ मिलुकिनतिनहिवितथआलापी
इहि विधि यमगण वचन सुनावें ❀ हनि हनि अधमन खंभलगावें ॥

दोहा--जे मद पीवत प्रीति करि, आमिष रत जे जीव ॥

तप्त तेल दै तिनहिं गण; कहत अधमले पीव ॥ ३ ॥

चौ०--तप्ततेल पीवत जब पापी ❀ मूर्छित महि पर गिरतप्रलापी ॥
यॉचत छाँह तेलके दाहे ❀ तब गण कहतन समुझेउकाहे ॥
चलु असिपत्र विपिन जहँ अहही ❀ अस कहि गणखरमारगवहहीं॥
तहँ पहुँचत तरु दल अति तीखे ❀ ऊपर परत कटत तनु दीखे ॥
रहत न बनत तहाँ पुनि भाजत ❀ करिबिलापबहुविधि दुखपावत
जे परकूट साखि नर देही ❀ कूट करम् बहु विधि किय जेही
ते असिपत्र विपिन महँ जावहिं ❀ शिरकटि पुनिहुइकटिदुखपावहिं
जे परहिंसक अधम नरेशा ❀ तेल यंत्र तनु पिरत हमेशा ॥

दोहा--बरदुखदाता मनुज खल,व्याधि कूप गिरि तात॥
गण गेरत बहु मारु दै, बहु प्रकार दुख पात ॥ ४ ॥

चौ०-बहुत कराह तेल घृत केरे ❀ तिल तल अनल जुलत मैं हेरे ॥
तेल चोर कहँ तेल कराहीं ❀ घृत चोरहि घृत माँझ गिराहीं ॥
जे परसहत दूध दधि हरहीं ❀ ते नर रक्तकुंडमहँ परहीं ॥
पाश बाँधि गल तेहिमहँ डारहिं ❀ यमगण दारुण त्रास दिखावहिं॥
तीरथ चलत जानि धन हरहीं ❀ ते नर रक्त पीब ह्रद परहीं ॥
देव सदन महिसुर गुरु धामा ❀ नाशत कुंड कूप आरामा ॥
वनवाटिका कुसुम बहु छेदहिं ❀ मठमखभवन सुरभि गृहभेदहिं॥
दीनभवन चटशाल गिरावहिं ❀ अस्थिचूर्णमहँ ते दुख पावहिं॥

दोहा--हरत उपानह वस्त्र शठ, पर भोजन बिचलान्न ॥
लोह यंत्र बिच तासु तनु, यमगण हनि पिरवात॥५॥

चौ०-जेनर घर पुर विपिन जरावत ❀ अग्निकुंड तनु तासु गिरावत॥
जे निज स्वामिहि दोष लगावहिं ❀ पर अपवादप्रीतिकरिगावहिं॥
तिन-कहँ शालमली तट हैं दुख ❀ पाशबाँधि लटकातअधोमुख॥
मुद्गर परिघन यमगण मारैं ❀ निर्दय तनक न करुणाधारैं॥
जो तिय परपति रति रत होई ❀ नाथवती विधवा किन कोई॥
तप्त लोहमय खंभ नराकृति ❀ गणवशतिय दुखभारि सोइ भेंटति

लोह शूल खर तप्त विशाला ❀ जीभ छेदि मुख करत विहाला
इमि दुखलहहिं अधम नरनारी ❀ अपर चारित्र सुनहु चितधारी
दोहा--क्रूरचित्त खल कलहप्रिय, महिसुर अपरकिकोइ॥
वदहिं विप्रसन जितहिं पुनि, सकल नरकगतसोइ ॥६॥
चौ०-जे नर हरतरतनअरुअभरन ❀ ऊँट महिष महिषी वृष गोधन
अगणित खंड करत तिनकरतन ❀ खर करवालनते हनि यमगन
जे दूषहिं सुरगुरु महिदेवन ❀ निगमन दूषत करत न सेवन
तिनकी जीभ छेदि यमके गन ❀ मुखमहँ भरत पीवशोणितघन
भखत जु मिष्ट अकेलहि पापी ❀ जरठ शिशुहि नहिं देत कदापी
तिन्हैं तृषा बाधतितिहिं थलअति ❀ यमगण तिनकीकरतबुरीगति
माँगत जल मारहिंते मुद्गर ❀ पुनि छाँडहिं मृगपति अरुशूकर
ते तनु काटहिं दुखद कराला ❀ पावत अतिदुख तब बेहाला ॥
दोहा--इहिविधियमगण दुखदअति, यमपुरदेतकलेश ॥
तदपि न चेतत मूढ नर, सत्य सुनहु मनुजेश ॥ ७॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते
नासिकेतोपाख्याने नरकविशेषवर्णनं नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा--सुनहु सकल इक अपर है, दारुण नरक मुनीश ॥
उठत रोम सुमिरत चरित, भजिय जानि जगदीश ॥१॥

छंद तोटक ।

तहँ पादप पावक ते पजरैं, बड शाख भयानकदीखिपरैं
बह विस्तर योजन पंचकहैं, इकयोजन उंचखडे तरु हैं ॥
खलपाश बँधे लटकेतिनसों, गणमारत तोमर लाठिनसों
तजि हा रव और नहीं सुनिये, तिहिंठां दुखपावततेगनिये
नरजो अपमानकरै द्विजको, शठलीपतजानिमहीकुजको

नितही उठि जे न नमैंरविको, नहिंमानतभूसुरगोकविको॥
तल तीछन वस्तु जरैं तिनके, बहुधूमभरै मुखपापिनके ॥
इहिभाँतिदुखीदुख भोगिजिये, असजानिसदाहरिकोभजिये
छंद-हरिभजिय असुगुनिसुनि समुझिय तजियममता मानको
भवकरन शिव पद हरन अवगुन, भवनतजुअभिमानको॥
करु करम हरिहित अवशिपरहित, नरमचित हुइ सबनसों
नतु लहहुगे तुलता शमनपुर, सप्त नरकन खलनसों १॥
दोहा-तिहि तट भीषण नरक इक, तप्त वालुका नाम॥
जरति अग्निसम अग्निवश, गमन करतरविघाम ॥ २ ॥
चौ०-तिहिंठां जरतअधमनरनारी ❀ भूख प्यास दुख पावत भारी॥
रोवत करुणा करि कर जोरी ❀ याचत जल भोजन मतिथोरी॥
बिनती करत शमनगनसनअति ❀ तेनदेत पुनि कहत परिघहति॥
मुद्गर तोमर लाठिन मारहिं ❀ कुंतन हति हति नरकन पारहिं
तप्त बालु महँ गिरत पुकारत ❀ सुनिहँसिहँसिगणबचनउचारत
रेरेअधम मूढ कलुषाकर ❀ रोवत कहा सुधिन करु तबकर
विना मोल कर जल ते पावा ❀ सोउन तृषित न कबहुँ पियावा
जो कोउ कहत हमहि जल देहू ❀ तासन कहत खैंचि किनलेहू॥
दोहा--साधु सुरभि गुरु अतिथि द्विज, जननिजनकअरुदीन
सुअशन निज धनकर जनित, इन हित कबहुँनदीन३
चौ०जोपैआनिअतिथिकोइमांगत ❀ अधमतोहिंसोरिपुसमलागत
कहत न इहि क्षण ममकर खाली ❀ जो न जाततब खिझतकुचाली
ह्यांते अपर धाम किनि जावे ❀ हम पर तव कछु करज न आवै
परुष वचन कहि मारन धावत ❀ सोइ फल रोइ रोइ दुख पावत
करेहु न हवन कबहुं मति मन्दा ❀ ताते परेहु गणनके फंदा ॥
जपेउ न हरि हर मंत्र उदारा ❀ हरि हर नाम न कबहुं उचारा
तोषेहु पितर न देव न कागा ❀ पंचयज्ञ नाहिं रचेहु अभागा ॥

घर आवत लखि कीन न आदर ❀ सोफल किन विलसहु अबसादर
दोहा--रेरे खल तैं कबहुँ नहिं, हमहिं सुना मतिमंद ॥
अब तेहि कर फल भरहु जो, भजेउ न रघुकुल चंद ४
चौ०रविकुजव्रतकबहूँनहिं कीना ❀ नहिं हरि हरयशसुनि चितदीना
बाहुल माधव माघ न न्हायो ❀ हरि हर उत्सव व्रत न करायो॥
भूमि पवन जल पावक देवा ❀ महिसुर गुरु महीश वन देवा॥
जननि जनक विद्या गुरु जेते ❀ विष्णु समान अहहिं जग तेते॥
मन क्रम वच कबहूँ न अभागे ❀ विष्णु समान जानि अनुरागे॥
इहि विधि निठुर वचन गण भाषत ❀ तप्त बालु महँ पापिन राखत॥
तिहि ते निकसिभजत जब दुरिती ❀ पुनि यमगण गेरततिहिधरती
इमि दुख पावत जन परिपापी ❀ सुनि सब जीभ रहे रद चापी
दोहा--त्राहि त्राहि कहि कहि उठे, कहु मुनीश अबसोइ
यमगण वाहन रूपतनु सब ठाँ लखियत जोइ॥५॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने नरकविशेषवर्णनं नाम एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा--अब हम वर्णन गणन कर, वाहन देह स्वरूप ॥
थिर चित ह्वै करि सुनहु सब, है यह चरित अनूप॥१॥
चौ०-कोइगणपिकचढिनभपथधावत ❀ गृद्धमोरसारसचढिआवत
चमगादर उलूक बक कागा ❀ केहरि मृग शृगाल शश नागा
रासभ ऊंट महिष अज कीशा ❀ इहि विधि वाहन भयद मुनीशा
कोइ नभ कच विथुरे कच केते ❀ कोइ तनुश्याम लालसित केते॥
जरत जुलन सम नयन विशाला ❀ महाविरूप रूप विकराला ॥
कठिन हृदय अति बढ तनु कोऊ ❀ कोउ अतिखरबगरबहर सोऊ ॥
कोउ अति पुष्ट दुष्ट जिमि मारत ❀ कोउ अतिकृशतनुहनहुउचारत
कोउ कपि मुख मृगपतिमुखकाहू ❀ रासभ शश बिडाल उरगाहू ॥

छंद- अजउरग कूकर नक्रदादुर, क्रकच बीछू मुखघनै
कोइ क्षार गोमय पंक तनु मलु,पीबशोणित कर सनै
कोउ कुंडली वृश्चिक विभूषण,नील पट कटि तट हनै
कर हाड झाड पहाड खरनख, दाढ काढत निगलनै १॥
पदहीन बहु पद बाहु बिन घन बाहु, बहु शिर शिरविना
बड उदर कूबर शृंग धर बहु, नयनश्रुति नाशा विना॥
शर शक्ति शूल कृपान तोमर, परिघ मुद्गर धनु गदा॥
छुर भिंदिपाल विशाल मूशल,परशु पाश धरे सदा५॥
दोहा--लोह दंड खर चक्रधर, सहज भयानक भूप॥
यम अनुशासन पाइते, पापिनको दुखरूप ॥ २ ॥
चौ०-मुख्य नरक अब तुमहिंगिनावहुँ ❋ जोमैंलखासकलसोगावहुँ
जो असिपत्र नरक मैं गावा ❋ पापिन कारण कहि समझावा॥
तहँ तरु उन्नत पृथुल महावन ❋ असि सम तिनके पत्र भयावन॥
गिरत निरंतर पत्र कराला ❋ अति तीखे मानहु करवाला॥
तिनते कटत शीश भुजदंडा ❋ अधम गिरत ह्वै ह्वै शत खंडा॥
रोवत खल दुख पावत भारी ❋ तदपि न मरत मरन अधिकारी॥
कूट गवाह चोर छल कारी ❋ औरहि छल कारि जितहिं जुवारी॥
जे जन हरत जानि परथाती ❋ जे विश्वासघात कुलघाती॥
दोहा--लोहशूलमय शृंखला, पापिनके पद डारि॥
दंड बाँधि तिन तरुन सों, उलटो टाँगत मारि॥३॥
चौ०-तिन तरु तलबहुह्रद मैं हेरे ❋ अतिशय दुखदायक नरकेरे॥
पीब पुरीष मूत कृति शोणित ❋ महासर्प वृश्चिक परिपूरित॥
तिन कुंडन तट शूकर श्वाना ❋ भीषण तनु खर दाढ बखाना॥
बलि भुज गृद्ध वसत तेहि कूला ❋ लोह तुंड जनु तीक्षण शूला॥
अधम नरन तरु शाखन टांगी ❋ यमगण मारत तोमर साँगी॥
कटि कटि शिर कुंडन महँ परहीं ❋ मनहु ताल फल नभ ते गिरहीं॥
धरि धरि खात उरग कृमितिनहीं ❋ इहिठां कीन पाप बहु जिनहीं

विधिवश शिर ह्रदतट जोगिरहीं ❁ तटवासी पशु खग तिहिधरहीं॥

दोहा-इहिविधि नर बहु पापकर, यमगण वश बिलपात
जिन नर तनु लहि नहिं करेहु, जप तप परहित तात ४

चौ०सुनहुअपरयमशासनभीखन ❁ लखेहुजुतहँपुनिकतहुँसोदीखन
अद्भुत भवन दीख इक ऐसा ❁ तिहुँपुर माँझ न होइहि जैसा ॥
तहां कालवश निपट भयावन ❁ दूसर नाम कृतान्त सुहावन ॥
हेम मुकुट महिषासन काला ❁ दुहुँ कर दंड पाश तनु काला ॥
निरखत चहुँदिशि कोपित कैसे ❁ रक्त भरे चख चितवत जैसे ॥
अति बल अतितनु सायुध जासू ❁ गण इत उत धातत चहुँपासू ॥
निजबलअसुरन वशकारि राखत ❁ तिहिडरअसुर नकनहिंभाषत॥
पाइ शमनते तिलक समाजा ❁ कहियतसो असुरनकर राजा॥

दोहा-नासिकेतके वचन सुनि, बोले मुनि करजोरि ॥
कहहु नाथ अति बल असुर, इनकी कथा बहोरि ॥ ५ ॥

नासिकेत उवाच ।

चौ०सुनहुसजगअसुरनकरहाला ❁ निजवशजिहिविधिकीनेहुकाला
एक समय यमपति हरषाई ❁ दीनेहु आयसु गणन बुलाई ॥
आयुहीन असुरन पहँ जावो ❁ यथायोग मम तट लै आवो ॥
अस सुनि चले दूत समुदाई ❁ क्षणमहँ तिन तट पहुँचे जाई ॥
यद्यपि असुर वृद्ध बल हीना ❁ तदपि महाबल आवत चीन्हा॥
बोले असुर देखि यमदूतन ❁ आयेहु हमहिं लेन जिमि भूतन॥
विनासमर हम जाब न तिहिठां ❁ तुम्हरे नाथ रहत हैं जिहिठां ॥
अस कहि मौन रहेउ सब साधी ❁ यमगण लागे करन उपाधी ॥

दोहा-कोउ गणकहत रिसाइ करि, बाँधि लेहु धरिबाँह ।
कोउ कहत मारत इन्हैं, लै गमनहु यम पाँह ॥ ६ ॥

चौ०असकहिलगेसम्हारनफासन ❁ वर्णन लगे शमनअनुशासन॥
सुनि सुनि असुर उठे रिसियाई ❁ कहेउधरहु कोउ भाजि नजाई ॥
दूतन सुनि दुर्वचन उचारे ❁ मुद्गर तोमर परशु सम्हारे ॥

मारहिं असुरन रिस करि भारी ❁ असुर तिनहिं हठि हनहिंप्रचारी॥
कोउ गण तोमर मारि प्रचारहिं ❁ कोउ मुद्गरहनि हनहुपुकारहिं ॥
तब अतिकोपि असुर बहु धाये ❁ सकल शमनगण हतिमहिढाये॥
मूर्च्छित हुइ गणपुनिउठिमाहिं ❁ असुरतिनहिपुनिमारिगिरावाहिं॥
इमि गण मूर्च्छिपरे खल गाजे ❁ निज निज घर सब जाइ विराजे॥

दोहा-मूर्च्छा बीती गणनकी, गये धर्म पति पास ॥
नाथ लेहु अधिकार यह,हमहिं न जीवन आस॥७॥

चौ०अतिबल असुरमहाभटभारे ❁ तिनते नाथ सकल हम हारे ॥
वचन सुनत मन कीन विचारा ❁ तुरतहिं कोपित काल हँकारा॥
तिहि क्षण आनि शीश तिननावा ❁ असुरविजयहितताहिपठावा॥
जाहु वेगि मम आयसु साधी ❁ असुरन शूरन आनहु बाँधी॥
आयसु पाइ लीन कटकाई ❁ चल्योअसुरजन मदहि बचाई
बाहन रूप विविध तनु भ्राजा ❁ अगणित वीर काल इक राजा
अस सुधि पाइ असुरदल कर्षा ❁ कहेउ सकल पुनि चलहुसहर्षा
पहिरि सनाह साजि निजवाहन ❁ सायुध चलेहु समर अवगाहन

दोहा-गजगजारिहय महिषवृष, खर सर पद अजजान
चढि चढि चले जुझार सब, बहु बल हनतनिसान८

चौ०औरौ बाहन विविध प्रकारा ❁ आगे सब वर्णब विस्तारा ॥
जो गण गज सवार हुइ आवा ❁ असुरन केहरि चढि तेहिदावा॥
जो केहरि पर दूतहि हेरा ❁ शारदूल चढिचढि तिहि टेरा॥
जो गण चढि तुरंग रण करहीं ❁ तासनमहिषपीठिचढिभिरहीं ॥
खर चढि आवत दूतहि देखी ❁ गजचढिमारहिंअसुरविशेखी॥
महिषारूढ शमन गण जोई ❁ तिहिसन्मुखहयचढिभिरुकोई॥
गणहिं निरखि अज वृषभासीना ❁ सर पदचढि तिहि हनत प्रवीना
जो पदाति बनि यमगण आवैं ❁ रथ चढि असुर तिनहिं सतरावैं

छंद-सतरावहिं रथ चढिअसुर अतिबल,भिरहिंसन्मुख गणनसों
गण तिनहिं हनि हनि महि गिरावहिं,परिघ मुद्गर घननसों

खर शक्ति शूल कमान बान, कृपान छुर लैलै हये ॥
हुइ कुपित असुरन विकल करि, करिशमनगण प्रमुदितभये३

दोहा--असुर सबल मूर्च्छित परे, कछु रण तजिगेभागि
कछुक मरे कछु नभ चढे, लागे बरषन आगि॥९॥

तोटक छन्द ।

बरषावतहैं खल आगि तहाँ,यमदूत खडे रणमांझ जहाँ
कछु दूत अकाश गये जबहीं,सब दानव आनि भिरेतबहीं
कोउ मारत सांगि दुहूँ करसों, परिघा पटहा छुर तोमरसों
शर छांडत मारन दूतनको,गण काटत बीचहिमें तिनको
कछु दानव जे रणकोविद हे, शिखि बाणनते गण यूथदहे
शर छांडत दानव यूथ जबै, चिकरात भगैं यमदूत तबै ॥
शिर जंघ भुजा कटि भूमिगिरैं,गण दानवसों उठिकोपिभिरैं
शर लागत दानवके तनमें,शिरबाहु गिरैं कटिके रनमें

छंद०शिरबाहु कटिकटि गिरहिं रणमहिं दनुज,पुनिउठिउठिलरैं
अतिसबल असुरनिकाम सब, बहुभाँति पुनि माया करैं
करिनिबिड तम जल धूरि पावक, उपल शोणित वरषहीं
शर शक्तिशूल समूह डारहिं, अलख हुइ पुनि हरषहीं ४॥
अतितुमुल समर विलोकि योगिनि,यूथरणमहँराजहीं॥
खग गृद्ध काक शृगाल आमिष, छीनि इत उत भाजहीं
तिहिकाल गण विकराल भाजि, बिहाल यमपुरकोचले
तब काल सबकहँ फेरि कोपित, कहेउ धनु नाराच ले

दोहा--फिरहु सकल दनुजनहतौ, समर माँझ सब वीर ॥
सुनि सरोष गण वगदि सब, लागे वरषन तीर॥१०॥

चौ०कोपित कहेउ कालकटुवानी ❀ सुनहुसकल शठदनुसुतमानी॥
देखहुँ तव बल रणमहँ जब लगि ❀ माया कीनविविधतुमतबलगि

अब सब लखहु मोर बल कैसा ❀ असकहि हाँकेहुजब करि भैंसा।
कहेउ गणन सन भिरहु प्रचारी ❀ मारहु सबहिं भयंकर मारी ॥
अस्त्र शस्त्र बहुविधि सब मारहिं ❀ असुरन हतिहति भूमिगिरावहिं
कोपि गणन कर धनु शर लीन्हा ❀ शर हतिअसुरनमूर्च्छितकीन्हा
बाँधे सकल असुर पाशनसों ❀ दृढ वेरी हनि यमशासनसों ॥
दंड बाँधि ग्रीवारलि फासा ❀ चले तिनहि लै यमके पासा॥

दोहा–भूपति काल कराल अति, अतिबलतनुविकराल
आगे करि असुरनगणन, यमतट गा तिहिकाल॥११॥

चौ०कालहि देखिशमनहरषाना ❀ उठा भेंटि बहुविधिसनमाना ॥
तिन सब वृत्त कहा समुझाई ❀ जिहिविधि समरभयो तिहिठाँई
सुनत धर्मपति असुरन हेरा ❀ निर्दय गणन सपदि पुनि टेरा॥
कहेहु कि पाइ काल अनुशासन ❀ करहु सो असुर लहैं दुख जासन
अस सुनि काल चलेउनिजगेहा ❀ धर्म प्रीति उर गुणत सनेहा ॥
तिहि ठाँ असुरन त्रासत काला ❀ गेरत नरकन माँझ विहाला ॥
काक गृद्ध कूकर कपि वनपति ❀ शूकरतिनतनुभखतदुखदअति॥
पुनि रौरव असिपत्र मँझारी ❀ गेरत तहाँ लहत दुखभारी ॥

दोहा–कितकन डारत शमनगण, अग्निकुंडके माहिं ॥
पीब रुधिर कृमि कुंड महँ, कितक परे बिलखाहिं॥१२॥

चौ०-कुंभीपाक तप्त सिकतामहँ ❀ पावत खेद असुर खल तामहँ॥
इहिविधि अगणित नरकमँझारी ❀ पावत कष्ट अधम नरनारी ॥
ताते मोर वचन सुनिलीजे ❀ हरिपद भजि शुभ मग पद दीजे
काल सबनकर भक्षण करिहै ❀ अति बलते कहु कवन उबरिहै
दुर्बल बली धनी धनहीना ❀ कलुषी धर्मी भूपति दीना ॥
पुष्टक्षीण पंडित अरु मूरुख ❀ वृद्ध युवा शिशु नारी पूरुष ॥
देव दनुज मुनि पन्नग यक्षा ❀ कर्बुर खग पुनि मेरु सपक्षा ॥
जो जग जीव देह धर गावा ❀ धरिधरिकालतिनहिं नित खावा

दोहा–कौन हर्ष जग जन्म कर, कौन मरे कर शोच ॥
यह नहिं समुझत अबुध जो, को जग ताते पोच१३॥

चौ०अबसबसुनहुचिह्नतुमतिनके ❋ स्वर्गनरकते आगम जिनके॥
जे नर हीनवर्ण तनु पावत ❋ जिनहिंदरिदगदनिपटसतावत
मिलत न अन्न उदर भारि जिनहीं ❋ नहिं तनुवसनपदननहिंपनहीं
पुत्रशोक तिय विरह दुखारी ❋ विधवा बांझ कलह कर नारी
सदा ऋणी कुष्ठी यशहीना ❋ पापकर्मरत संतत दीना॥
श्रीहत नारि कर्कशा लहही ❋ निरत कुसंगति कोपित रहही
इहिविधि तुम जिहि नरकोदेखो ❋ आगम तासु नरकते लेखो॥
सुनो स्वर्गते आवत जो हैं ❋ उत्तम वंश दिव्यतनु सोहैं॥

दोहा--ज्ञानी निरुज सुकर्म रत, सुखी गुणी भट सूरि॥
सुसुत सुरमणी सुजन बहु,वाहन धन परि पूरि॥१४॥

चौ०सबविधिसुखपरिपूरितजिनके ❋ चिंता न कछु बातकी तिनके
ऋतु रुचते पट बाहन रूरे ❋ सुभग अमोल मनोहर भूरे॥
सेवक शुचिमन आयसु पालक ❋ रहित शत्रु सज्जन प्रतिपालक
ये सुख अपर बहुत हैं जिनको ❋ आवत लखो नाकते तिनको
पथिकश्रमितजिमिलहितरुछाया ❋ करिविश्रामचलहिं मुनिराया
निजनिज पुण्यपापवश प्रानी ❋ सुखदुखविलसतपन्थसिरानी
पहुँचे भवन लहहिं तहँ करनी ❋ आवागमन होतजिमि वरनी
स्वर्ग नरक घर चेतन राही ❋ भव मगदुखसुखलहितहँजाही

दोहा--नरक दुखद बहु मैं कहे, सुनहु स्वर्गकी गाथ॥
सुनि शुचि मग पग दीजिये,भजि लीजे रघुनाथ१५॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायण-
विरचिते नासिकेतोपाख्याने कालासुरसंग्रामवर्णनं
नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

नासिकेत उवाच।

सोरठा--सुनहु सकल मम बैन,नासिकेत अस हर्षि कह॥
अब हम कहब सुखैन, धर्म्मीजन जिहिगतिलहत १॥

चौ०ईश दिशा इक नगर सुहावा ❋ कछुक दूरि यमपुरते गावा॥

तहाँ मनोहर घर बहुतेरे ❋ सुकृतिनके हित हैं हम हेरे ॥
तुंग धवल मणिमय दृढ सुंदर ❋ सुमन वापिका सरप्रतिमंदिर
मैं निरखी सारिता तिहिठाहीं ❋ घृत मधु क्षीर बहत जिन माहीं
सब विधि व्यंजन तुरत बनाये ❋ दधिओदन कर गंज सुहाये
सुवरण तार कलित बहु मोला ❋ बहुविधिपटबहुविधितहँदोला
बहुभूषण बहु बाजन बाजत ❋ बहु सुगंध बहु पेखन साजत
काम वाम छबि अगणित वामा ❋ वामरूप सब चितवनि वामा

छंद--छबि अमित नख शिखरूपसुंदर, कहत बनत नकविनपै
गुरुचरण सरसिजनायनिजशिर, कहतकछुकविसत्यपै॥
अति मृदुलसारुण पदनपर, नखलालकिमिसुखमालहै ॥
जनु अरुण सरसिज कुसुम पर; बंधूकसुमनकि मालहै ॥ १॥
नारंगि सम एँडी सुभग, नीरोम पिंडरी छबि मई ॥
घनपीनकदली थंभ जंघ, नितंब रतिपति निपजई ॥
कटिमुष्टिगत अतिमृदुल जिहिलखि, वनप भामिनिलाजई॥
गंभीर नाभि विचित्र त्रिवली, उदरमंजु विराजई २॥
कुचपीन उन्नत तालफल, करहाट कलश समान हैं ॥
करलाल नवल अशोकदलसम, मृदुल कर पल्लव कहैं
भुज कुंज नाल समान कंठ,कपोल दरकी छबि हरै॥
श्रुति सीप सम अति लोल कुंडल, मुक्त हार गरे धरै ॥
वर चिबुक सुभग कपोलशशि कर, दर्पहर मुसुकानिहै
द्विज कुन्द कलिका मालिका सम,अधर बिंबसमानहै
तिल कुसुम शुक मुखतेमनोहर,नासिकाबिचि नथकपैं
जलजात दल मृगबाल सफरी,खंज लखि नैननचपैं ४॥
खर वाम शर सम सरस मधुरे, मर्म हतन कटाक्षहैं ॥
वर भौंह कुटिल मनोज धनु सम, सकुच वश मंदाक्षहैं
श्याम कच मृदु सघन चोटी, नाग वाम समानहैं ॥

पिक वीन लाजत कंठ ते इमि;सकल सुषमा वानहै ९ ॥

दोहा--चंपक तनुबाला सकल, पहिरे सुन्दर चीर ॥
काम तन्त्र पुनि सब पढीं, भूषण गन्ध शरीर ॥२॥

चौ०-इहिविधि तहांरहति बहुकन्या ❁ रूपराशि गुण मन्दिर धन्या
तिहिं थल जात सुकृत करि जोई ❁ चित दै सुनो कहब मैं सोई ॥
प्रपा कूप वापी सर सुन्दर ❁ बनवावत गो द्विज सुर मन्दिर॥
महादान महिसुरन बुलाई ❁ देत तुलादिक मत हरषाई ॥
भक्ष्य भोज्य पुनि लेह्य सुहाये ❁ चोष्यचारि विधिअशनगिनाये
अन्न वसन सुवरन गो भूषण ❁ भूमि दान दे रोपत रूषन॥
विप्रन अतिथिन दीनन सादर ❁ देत दान जे नित करुणाधर॥
धर्मराज कर आयसु पाई ❁ ते सुकृती निवसत तहँ जाई॥

दोहा--भोगितहाँके सकलसुख, पुनिमहि मंडलआत ॥
उत्तम कुल गुण द्रव्य लहि, धर्म करत सच्चुपात २॥

चौ०-पुनिहम वरणहिंसुनहुसचेता ❁ सहजहि धर्म बनत मुदहेता॥
आवत निजगृह जेलखिविप्रहि ❁ सविनयनमितिहिं तोषहिंछिप्रहि
अतिथि न आवत निजतट देखी ❁ मधुर वचन तब कहतविशेखी॥
को तुम आवत किहि थलते हो ❁ का अभिलाष कहाँ पुनिजैहो ॥
असकहि भक्तिसहित दे आसन ❁ यथाशक्तिशुचि अन्नफलासन॥
पावन पेय तोय जे देहीं ❁ अतिथि हेतु तन धन दियजेहीं॥
तिन सम पुण्यपुंज जग नाहीं ❁ ते सब सुख पावत तिहि ठाहीं॥
चारौ वर्णनके अब धर्मन ❁ वर्णब सुनहु चहिय जो कर्मन॥

दोहा--विप्र नियम करि होमरत,दयागार शुचि शील॥
धर्मपरायण सत्यरत,सुऋतु काल रति शील॥ ३ ॥

चौ-०विप्रनके षट कर्म बखाना ❁ तिनहि सप्रेम करत मतिमाना॥
हरि हर यश कहि जन हरषावत ❁ शिव हर कृष्ण राम हरि गावत
देत नीति मग पग हठि जोई ❁ अवशि विप्र सुरपुर वसु सोई॥
जो क्षत्रिय रण शूर बखाना ❁ दीनन जुगवत दयानिधाना ॥

कन्यादान कीन द्रुम रोपे ❀ कबहुँ न जानि विप्र गुरु कोपे॥
जद्यु तिनदीन सकलमहिविप्रन ❀ सुरपुरते आवत महिछिप्रन॥
एक कल्प बसि स्वर्ग मझारी ❀ क्रीडत सुखी संग सुरनारी॥
धर्महीन नर जीवत कैसे ❀ भस्त्रा लोहकारकी जैसे॥
ताते अवशि सुमगु पगु दीजै ❀ वचनमोर सुनि निज हितकीजै
यह इतिहास पुनीत सुहावा ❀ जो मैं लखा कछुक सो गावा॥
अपर वृत्त सब सुनहु मुनीशा ❀ मैं वर्णन नबि हरि पद शीशा॥

इति श्रीमाद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते
नासिकेतोपाख्याने नरकवर्णनं नाम त्रयोदशोऽध्यायः॥ १३॥

नासिकेत उवाच।

दोहा-ईश कोण यमनगर ते, स्वर्ग सुरम्यानूप॥
तहां बसत जिहि सुकृत करि, सुनहु सुमुनि कुलभूप१॥

चौ०एक समय निज गणन बुलाई ❀ धर्म्मराज अस दीन रजाई॥
ऐसे मनुजन देखो जबहीं ❀ आयु हीन इत आनो तबहीं॥
धर्मी निगमागम रत कैसे ❀ वन गज रेवा तट भजु जैसे॥
कातिक पुनि आसोज मझारी ❀ अन्न देत दीनन सुखकारी॥
पूस माघ करि इंधन दाना ❀ पालत विप्र दीनके प्राना॥
माधव जेठ अषाढ महीना ❀ जे जलदेत तिनहिं परबीना॥
तिन हित स्वर्ग सुरम्यानूपा ❀ वसहिंकल्प भारि लहि सुखरूपा
फागुन चैत करत फल दाना ❀ ते रविलोकहि करत पयाना॥

दोहा-अन्न देत दुर्भिक्ष में, कनक देत सुरभिक्ष॥
महाप्रलय लगिते वसत, सुरपुर धर्मी कक्ष॥ २॥

चौ०-जलद विष्णु जन दोनोंभाई ❀ वैदजु दीन विप्र सुखदाई॥
तीनों अवशि अमर पुरवासी ❀ होत विमानन चढि चढिजासी
तिनके जानन लगी तुरंगिनि ❀ सेवतितिन कहँ अमरनितंबिनि

सुनहु विमाननकी सुखमा अब ❀ वाहन वरण कहौं तिनके सब ॥
बहुत विमान हंस जहँ जोते ❀ कितकन खैंचत मोर कपोते ॥
कितकन चक्रवाक लै चलहीं ❀ कितकन वृष तुरंगचल बलहीं ॥
कितकरथन सारस छवि साजैं ❀ कितक यान पंचानन गाजैं ॥
स्यंदन बहुत गजनके हेरे ❀ सकल सुखद नर जान घनेरे ॥

दोहा-बहुविधि वाहन रथनके, घुँघुरू घंट बजात ॥
प्रतिविमान सुरदारिका, जे सुकृती सुखदात ॥ ३ ॥

चौ॰ कोउरथतप्त कनकछबिधारे ❀ शुद्धफटिकसमकितकनिहारे ॥
कछुकअरुण घनअरुण सुहावन ❀ नील मेघसम कछुअतिपावन ॥
मुक्तमाल मणिदीपक जिनमें ❀ दिव्य कुसुमभूषण पट तिनमें ॥
तोरण ध्वज पताक छबिकारी ❀ शीतल मंद सुगंध बयारी ॥
घन केशर लवंग खस एला ❀ मिलित वारिकण गंधित तेला ॥
नृत्य गीत बाजन परिपूरित ❀ शिखि पिककारि शारिकाकूजित
इहिविधि अमित विमान तहाँ हैं ❀ सुकृतीनर सुख लहत जहाँ हैं ॥
धर्म रजाइ पाहि सुरगण जब ❀ सुकृतिन रथ चढाइ गवने तब ॥

दोहा-कछुक स्वर्ग वाहन कहे, अपर सुनहु मुनिवृन्द ॥
मोहिं अधिक सुख होत अब, सुमिरत सो आनंद ॥ ४ ॥

इति श्रीमद्द्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते
नासिकेतोपाख्यानेस्वर्गवाहनवर्णनं नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा-स्वर्ग माँझ इक सरित तिहि, पुष्पोदका सुनाम ॥
जहाँ सुकृत कृत मनुजके, सब विधि पूरण काम ॥ १ ॥

चौ॰ पयपयसरिततासुनित बहई ❀ चामीकर सिकता सोधरई ॥
सो सिकताकोमल सुखदायक ❀ तिहि तट बहु पेखन बहुगायक
उपवन विविध कुसुम मय तीरे ❀ शीतल सुरभि पवन बह धीरे ॥

उन्नत फलित नवल दल फूले ❀ सुर पादप सुकृतिन अनुकूले॥
छाया सघन सिद्ध गंधर्वा ❀ चारण विद्याधर सुर सर्वा ॥
सुकृतिनके मन जुगवत ठाढे ❀ विनय समेत प्रीति अति बाढे
पक्व मिष्ट फल सुधा लजावत ❀ सुकृतिनके भोजन हित लावत
अनुपम कुसुम देत सुकृतिनको ❀ सूँघत तिनहिं देत मुद मनको

दोहा-सिकता बिच लुढकत कितक, फिरत तरुन तरजाइ
पीवत जल पीयूष सम, शुचि फल मीठे खाइ ॥ २ ॥

चौ०-अमर नाग गंधर्व कुमारी ❀ चारण सिद्ध सुता छबिधारी॥
नूतन यौवनमय सब बाला ❀ श्रुति लगि लोचन निपटविशाला
भ्रूकराल श्रुति कुण्डल लोला ❀ अरुण अधर मृदुसुखदकपोला
केकी कंबुकपोत लजावनि ❀ ग्रीवा भूषण सहित सुहावनि
पूरण निशिपति वदन सुहावति ❀ कोकिल कंठ मधुर सुरगावति
दिव्यवसन भूषण सब धारहिं ❀ मृदुमुसिक्यानिसुवचनउचारहिं
सघन कनक घटसम कुच राजैं ❀ तनुतनुकृशकटिहारितियलाजैं
मृदु कर पट सुजंघ जनु रंभा ❀ इमि तिय बहुत मुख्य तहँरंभा

दोहा-ते अबला तिहिं सरित तट, अगणित राजैं नित्य
धर्मराज रुख पाइते, सुकृतिनकी सब भृत्य ॥ ३ ॥

चौ०आनिसरिततटधरिकरनरकर ❀ जलविहारहितधसहिंसारितवर
कारि मज्जन करमें कर घाली ❀ रुचिभारिउपवनविहरतिआली
सूँघत सुमन नवल दल परसत ❀ खातमधुरफल उपवन निरखत
भवन जाइ बहु विनय सुनावहिं ❀ मणिमयसिंहासन बैठावहिं ॥
बहु विधि व्यंजन तुरत बनावहिं ❀ कंचन थारन धारि कारिलावहिं
शुचि भारि भोजन करत सुखारी ❀ तब लगि अद्भुत छबि इकनारी
एलादिक सब वस्तु रलाई ❀ बीरी पातनकी लै आई ॥
निज कर पान खवाइ सहेली ❀ चलु सयान घर कहति नवेली

दोहा-तुंग महलपर धवरहर, बारहदर मणि खंभ ॥
तहाँ जाइ ते नर बसत, जिन त्याग्यो इत दंभ ॥४॥

चौ० चित्र खिँचे भींतिन पर कैसे ❀ बहुत रूप रति मन्मथजैसे॥
तनी मृदुल चादरि तिहि मंदिर ❀ मणिमय दीपक दीपत सुन्दर
ताखन माँझ विचित्र पिटारी ❀ लघुदीरघभारि वस्तु सुधारी
तिहि ठाँ दृढ मृदु पलँग डसाई ❀ तापर तूल मई सुतुराई ॥
पुनि शुचि सादर धवल बिछाई ❀ क्षीरफेनु सम मृदुल सुहाई ॥
गंडू सुभग विचित्र सम्हारे ❀ जिहि पर धरे मनोहर सारे॥
तिनपर सुकृतिनके गुण कहि कारि ❀ पौढावतिप्रमदागणहँसिकारि
चापैं चरण सबै सुकृतीके ❀ अति सुख लहत सुवत करतीके

दोहा-तब अति प्रिय तिय अंक भरि, बिलसै नर सुखपाइ
जिन कर्मनते पाइए, सो सुनिये मुनिराइ ॥ ५ ॥

चौ०-गुरुसुर महिसुर पूजन दक्षा ❀ करत दया करि सबकी रक्षा॥
निखिलागम अति सारविचारक ❀ सकल कामप्रद सुधरमधारक
पुष्पोदका नदी तिनके हित ❀ विधि निर्मितसबभाँतिसुखद नित
धर्मी बहु तनु तजि तहँ जाई ❀ तिन कर वृत्त सुनहु चित लाई
तिहि तटिनी तट शीत न घामा ❀ लोभ मोह मद कोप न कामा॥
अतिबल पुष्ट न क्षुधा पिपासा ❀ अजरअशिशुपनअगद सुपासा
जिन इह जन्म कष्ट व्रत कीने ❀ ते तिहि ठाँ सुख लहत नवीने
दुराचार जे विग्रह कारी ❀ तिनकर वृत्त सुनहु चितधारी

दोहा-जे पापी यमपुर पचत, तिनहिं देखि करिधर्म ॥
देखा मैं निज नयन यह, कहत वचन अति मर्म ६ ॥

चौ०-रेतैं मूढ मनुज तनु पावा ❀ दुराचार तिहि बादि गमावा
दुष्ट संग वसि कत अघ कीना ❀ किहिहितशुभमगुपगुनहिंदीना
जिमि इन सुकृत कीन तुम करते ❀ इनके संग जाइ सुख करते ॥
पुनि किहि हेतु नरक महँ दहते ❀ यमगण मारु वचन कत सहते
मानुष तनु सुर दुर्लभ पावा ❀ मूढ ताहि तैं वृथा नशावा॥
इहिविधि यमसुखते सुनि काना ❀ मैं सिखवचन परम सुखमाना
अपर सुनहु यम वचन सुहावा ❀ कवनिहुभाँति हमहुँसुनिपावा

एक समय गणपतिहिं बुलावा ❀ दंडपाशकर भीषण आवा ॥
छंद--कर पाशदंड कराल तनु निज, गणनलै यम तटगयो
लखि तिनहिं यमिपति बोलि निज तट, मंत्रइव श्रुतिमहँदयो
सुनि वचन ममहित जानि मानि, विचारिमहिपर जाइयो
तजि विष्णु जन शिवभक्तश्रुति, नय निरत इत लै आइयो
जे मनुज हरि संबंध युत लखि, तिनहिं निज शिर नाइयो
जे जपतनिशिदिन गंग हर, दिनमणितिन्हैंनसताइयो
जे मनुज परहित निरत तीरथ, फिरत जे व्रत करतहैं ॥
चलि वेद पथ गथ धर्म सुनि, कथि मम वचन ते डरतहैं२
गोविंद केशव राम सरसिज, शंख चक्र गदाधरम् ॥
गोपाल वामन वासुदेव, नृसिंह कृष्ण दयाकरम् ॥
विश्वंभरेश सुरेश धरणीधर, महेश जगत्प्रभो ॥
भव शरणमिति वाराह कच्छप, मीन रूप हरेविभो ३॥
पाहीश मामितिशुद्ध मनसा, प्रत्यहं निगदन्ति ये ॥
भूदेव गो रवि पिप्पलानल, शंकरान्प्रणमंति ये ॥
बत तानिहानय मा पुरे मम, दूरतस्त्यज सज्जनान् ॥
द्विज दीन गोसुरसेवकान्खल, जह्नु जाजलमज्जकान् ४
दोहा--सुनि वाणी यमगण सकुचि, कर जोरे सुख मानि
धर्मराज मुख निरखि सब, चले सकल दुखदानि ॥ ७ ॥

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचंद्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने स्वर्गस्थापुष्पोदकानदीवर्णनं नाम पंचदशोऽध्यायः ॥१५॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा--अब हम वर्णब शमनपुर, मारग मानस रूप ॥
सुनहु सजग मुनिवर सकल, है यह वृत्त अनूप ॥ १ ॥

चौ०-यमपुर पंथ भयंकर जानो ❋ योजन छयासी सहस बखानो॥
कछुकदूरिलगिजरतिभूमिकिमि ❋ प्रबलानलवशआयसमहिजिमि
कछुक दूरि तक है अति पानी ❋ कछुक दूरि तम निबिड बखानी
कछु पर्वत कछुविटप तहाँहैं ❋ कछुक लोह खर शूल जहां है ॥
कछुक दूरि अति रुद्र मही है ❋ कछुक दूरि वालुका दहीहैं ॥
क्षुधा तृषा करि पीडित दुरिती ❋ यमगणवशगमनततिहिधरती॥
विना धर्म तिहि पंथ मँझारी ❋ क्रूर शमन गण मारत मारी ॥
लोहदंड हति धरणि गिरावहिं ❋ सांकरि बाँधि तहां पुनि लावहिं

दोहा--ग्रीवाबिच बहु यत्न करि, सांकरि फांसी डारि ॥
निर्दयगण मारत दुखद, लोह दंडकी मारि ॥ २ ॥

चौ०तबमूर्च्छितहुइगिरतधरणिपर ❋ सुमिरतसुकृतमनुजदेहींकर॥
रोवत करुणा करि करि भारी ❋ करत न कोइ तब तहँरखवारी
तब गण कहत नरहि लखि वानी ❋ रे खल पाप निरतअभिमानी
दुर्लभ नर तनु लहि का कीना ❋ सुलभहु दान भूलि नहिंदीना
ईंधन नीर सुलभ जग माहीं ❋ दीनन सौंपि दीन तुम नाहीं॥
व्यर्थ गयउ तव तनु धन कैसे ❋ अटवी निपजि मालती जैसे॥
नहिं कबहूं तीरथ पगु धारा ❋ पूजेहु कबहुँ न विप्र उदारा ॥
होम न कीन दीन नहिं दाना ❋ पर्व कालतिय रमि सुख माना

दोहा--सोफल इहि ठां भरहु अब, करत शोचकत दुष्ट॥
दीनन दीनेहु ग्रास नहिं, आपु खाइ तनु पुष्ट ॥ ३ ॥

चौ०-योग अयोग न बात विचारी ❋ गर्व कीन खल सबसों भारी॥
भूमि कनक गो तिल भू देवन ❋ दीन दाननहिं करितिन सेवन
सो यहु ग्रहणमाहिं सेजन पारि ❋ जपेहु न हरि हरमंत्र प्रीतिकारि
नर तनुते खल वादि गमावा ❋ पारस मणिहिकीशजिमिपावा
सुरभि श्याम धन सहित नवीनी ❋ वैतरणी तारण नहिं दीनी ॥
जो पथथकितअतिथि घर आवा ❋ तिहिश्रमभूलिनकबहुँनशावा
आसन सुजल सुवचन उचारी ❋ चरण धोइ करि सुखद बयारी

यथाशक्ति भोजन दै तिन कहँ ❀ कबहुँ न दीन्ह दीनअतिथिनकहँ॥

दोहा--भूख प्यास वश भ्रमत महि,तैं निरखे नर भूरि॥
देनेके डर अधम तू, रह्यो सबनते दूरि ॥ ४ ॥

चौ०-धर्म सुलभसबविधि संसारा ❀ अधम ताहि तैं निपटविसारा॥
अब चलु सपदि शमनके आगे ❀ पावहुगे फल सकल अभागे॥
अस कहि फाँस बाँधि दै गारी ❀ मारत विषम गननकी मारी॥
इहि विधितिहिपथि थकित घनेरे ❀ गणवशअधम दुखितहमहेरे ॥
जे निगमागम भ्रष्ट अचारा ❀ गुरुसिखवनतजिमनरुचिधारा
ज्वारी मद्यप भूसुर घातक ❀ गो घातकगुरुस्वामि निपातक
नाशत गर्भ अधम तिय घाती ❀ परतिय माँझ पगे दिन राती॥
मद्य मांस व्यवसाय अपारा ❀ हरहिं जानि परखेत अगारा॥

दोहा--अंध बधिर शिशु जरठ पुनि, पंगु नपुंसक मूक ॥
दीन दार गुरु साधु सुर, इन कर धन हर चूक॥५॥

चौ०पर्व काल तियविहरनशीला ❀ सुनीनयदुपतिरघुपतिलीला ॥
जे प्रच्छन्न पाप कर्त्तारा ❀ चोर कुकर्मी विषदातारा ॥
ते सब तिहि मारग बिलखाहीं ❀ कहत मरे जल कतहुँ कि नाहीं
इहि विधि जब बहु अधम पुकारत ❀ यमगण भीषण तनु तब मारत॥
रिस करि लोहदंड मुद्गरते ❀ खैंचत जब करि दूत रगरते॥
रुधिर वमत कछु वश न चलत है ❀ यमगणवशदुख अधिक सहतहै
नासिकेत जब इहि विधि भाषा ❀ तबऋषिमुख्य कहेउतजिमाषा
यमपुर पंथ बिकटहै जितनी ❀ भिन्नभिन्नवर्णहु सब तितनी॥

दोहा-किमिशासन मर्यादकिमि, सकलकहौ मुनिराज
सुनत वचन विधिसुत तनय,बोले सुनु ऋषिराज ॥६॥

चौ० निज तनु त्यागत जब नरनारी ❀ वगदत बंधु मशान बिसारी॥
जननि जनक सुत सहज सगेरे ❀ भगिनि नारि तनयाकुल केरे ॥
गजरथ तुरँग धाम धन बागा ❀ गो महिषी महि कूप तडागा॥
ये पुनि परममित्र निज नारी ❀ गण वश गमनत सबहिबिसारी

करत जु सुकृत दुरित नर नारी ❋ सो सँगजात सुनहु सुविचारी॥
सुकृत दुरित जन संग सदाहीं ❋ सुखदुख देत पंथ चलि जाहीं॥
ताते अस गुनि धर्म करीजे ❋ हरिभजिदीन द्विजन सुख दीजे॥
अति बिकराल पंथ यमपुर कर ❋ सुमिरत अजहुँ होततनु थर थर

दोहा-वाहन भोजन वसन जल, सुकृती ठाँ ठाँ पात॥
दुरितीघसिटतपिटतअति, क्षुधित तृषित मग जात॥७॥

चौ० तिहि महँ आठ भयंकर ठामा ❋ चित दे तिनहिं सुनहुमतिधामा
प्रथमहिं रुद्रभूमि तहँ परही ❋ हाहा रव दुरिती तहँ करही॥
योजन सहस मान सो वरणी ❋ जोकरि तरिय सुनियसोकरणी
भीतन अभयदान जो देतहि ❋ ते नर तिहिठाँ लहतन खेदहि
पुनि मग योजन पाँच हजारा ❋ लोह शूल खर तहाँ पसारा॥
योजन नख शत भूमि अगारी ❋ तिहिमें तप्त बालुका डारी॥
ये दोउ ठाम तरन हित दीजे ❋ यान उपानह वाहन चीजे॥
नातरु यमगण अवशि घसीटत ❋ लै गमनत तहँ बहु विधि पीटत

दोहा-आगे ताके सहसदश, योजन मग छुरधार॥
तिहिठाँ शय्यादानकरि, सुखसन जात उदार॥८॥

चौ० पुनिरदसहसकोशमहिकैसी ❋ जरतिकनकमहिदशदिशिजैसी
प्रपादानसुर सदन चिनावत ❋ वापी कूप तडाग खुदावत॥
गुरु द्विज दीन धाम बनवावत ❋ बाग सुमन वाटिका लगावत
ते तिहिंठाँ सुख लहत अपारा ❋ नतरु जरत गण मारतभारा॥
नखत सहस योजन महि आगे ❋ तिहिठां चलत नरन भय लागे
महानिबिडतमकाल निशासी ❋ तिहिठांते सुकृतीसुखपासी॥
जे नर दीप देत सुरधामन ❋ गुरु सुरभी महि सुर विश्रामन
जे तनयादिक दीपक देहीं ❋ ते सब सुख प्रकाश पग देहीं॥

दोहा-शुचितीरथ अस्नान किय, पितर देव सन्मान॥
धेनु यान वारण तुरँग दीन महिसुरन दान॥९॥

चौ० पुनिवसुसहस भूमिजल पूरी ❋ तिहिठां जन दुख पावतभूरी॥

तिहिठां भूमिदान दै प्रानी ❋ सादरगण वश गमनत ज्ञानी ॥
योजन सहस पचीस अगारी ❋ अगम महोदधि है दुखकारी ॥
दुष्ट जन्तु दुर्मल परिपूरन ❋ तहाँ करत गण खल शिरचूरन॥
लगत खलन जब क्षुधा पिपासा ❋ यमगण तबै दिखावैं त्रासा ॥
जे जल सर्पि देत सन्मानी ❋ क्षणमहँ ताहि तरत ते प्रानी ॥
योजन छयासी सहस बखाना ❋ यमपुर पंथ अगम अति जाना ॥
पुनि आगे सारिता वैतरणी ❋ शत योजन प्रमाण जेहि वरणी

दोहा–तिमि झष नक्र कराल अति, पीब रुधिरमय नीर
अगम सबहि अधमन अवशि, सो सरि यमपुर तीर १०॥

चौ०ताहि तरनहित कहौं उपाई ❋ सुनो सकल मुनिजन चितलाई
कृष्णाधेनु दान महिदेवन ❋ दीजिय करिय सदा गुरुसेवन॥
जानि जनक तीरथ गो दीना ❋ सेवत सादर इनहिं प्रवीना ॥
गंगासागर संगम माहीं ❋ देहिं दान चित विमल नहाहीं॥
दृढव्रत धरत अतिथि सन्मानत ❋ निगमागम करि नेम बखानत ॥
हरिहर यश श्रुति पुटकरिपीवत ❋ जे जन रामनाम जपि जीवत ॥
ते तिहि सरितहि उतरत कैसे ❋ गोपद गर्त जलहि नर जैसे ॥
हत सनमाहि साजि गो दीनी ❋ उत धरि पूँछ सुगम मग्रु कीनी

दोहा–गोसठ धरि तिहि सरित महँ, तरत लखे बहुजीव
बहुतक डूबत दुख सहत, तबहुँ न सुमिरत पीव ॥ ११ ॥

चौ०आगे धर्म शील मैं देखे ❋ करत कुतूहल जात अलेखे ॥
शुद्ध उपल रवि बिम्ब सरीसे ❋ अगणित रथ विमान नभ दीसे
निज निज धर्म कर्म अनुहारी ❋ भोग करत सब नर अरु नारी ॥
पीब रुधिर कृमि कूपन माहीं ❋ अधमन यमगण गेरिसताहीं ॥
भीषण कूकर देह विदारैं ❋ दारुण मारु समनगण मारैं ॥
इहिविधि धर्मराजके वारे ❋ अधम मालमैं घुसत निहारे ॥
धर्मीदेव देह धरि जाहीं ❋ पापी प्रेत शरीर समाहीं ॥
सब सुख लहत सुखी सब सुकृती ❋ बहुदुख भरत जात बहु दुरिती ॥

दोहा–धर्मराजकी सदसि महँ, जब यमगण लै जात ॥
चित्रगुप्त तिहि मनुजकर, सुकृत दुरित समुझात १२

चौ०करिनिर्णयसबविधि समुझाई ❋ धर्मराज तब देत रजाई ॥
इनहि जाइ विलसावो स्वर्गहि ❋ इनहि मारु दै गेरहु नर्कहि ॥
जस तुम कर्म करे तस पावो ❋ निजकृतसुमिरिमनहिंसमुझावो
इहिठां महा तपोधन नाना ❋ निर्णय करत मुनीश सुजाना ॥
मेरो भलो बुरो जनि मानो ❋ निगमागम पुराण फुर जानो ॥
पुरट पाट मणिभूषण जाना ❋ रसगोरस व्यञ्जनविधि नाना ॥
जे सनमानि जानि भुवि देहीं ❋ ते सब वस्तु सुलभ करिलेहीं ॥
इष्टद सुखद तिमिर हर घरमा ❋ महा विपति हरप्रीतमपरमा ॥

दोहा–विजन भूमिमहँ बंधुवर, यमपथ तारक हेरु ॥
सुरतरु दारिद पापकहँ, भवसागर कहँ बेरु ॥ १३ ॥
सुगम धर्म सो भूमिपर, ताहि न करत अजान ॥
नासिकेतके वचनसुनि, मुनि गण बहु सुखमान १४

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते
नासिकेतोपाख्याने यमपुरमार्गवर्णनो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

नासिकेत उवाच ।

दोहा–जोमारग अधमन दुखद, सुकृतिन सोइसुखदात
निरखत कुसुमित कलिततरु, सब सुख पावतजात १

चौ०रम्यपन्थ कुश कंटक हीना ❋ सगनसुतरुखग रटतप्रवीना ॥
त्रिविध समीर सुनीर तडागा ❋ वापी कूप प्रपा वन बागा ॥
इत उत दधि पय सरितबहाहीं ❋ अतिसमीपतहँ शीतल छाहीं ॥
अशन चारि विधिकी बहु राशी ❋ तिन तट विबुधसुताकमलासी
वाहनविविध तुरँग गज गाजे ❋ सुकृती तिन पर जातविराजे ॥
जे इत एक दान नर देहीं ❋ तिहिठां कोटि गुणित सब लेहीं
अब इत सुनहु सुभग इतिहासा ❋ जो सुनिकहिचितलहहिंहुलासा ॥
समुझत सुनत धर्म रत होई ❋ अस विचार राखौं नहिं गोई ॥

दोहा--एकबार मुनिगण सहित, राजै धर्म सुवेष ॥
उडुगण महँ अति मोद भरि,मनहु शरद राकेश २

चौ० तिहिठाँ वर्णत हारि गुणग्रामा ❋ रटत वीन नारद मुनिनामा ॥
पीत दुकूल राम रज राजा ❋ तुलसी माल तिलक वरभ्राजा॥
गमने रवि रवि सुषमा धारी ❋ निरखिसभासद भये सुखारी॥
सभा सहित उठि आसन दीना ❋ पूजनषोडशविधि पुनिकीना ॥
स्वागतकहि यम वचन उचारा ❋ सुनहु विनय मुनिराजउदारा॥
फलेहु आजु तप सुकृत हमारा ❋ लहेउजन्म फल दरश तुम्हारा ॥
कित आयहु वर्णहु अब सोई ❋ करिहौं वेगि जु आयसुहोई ॥
सुनत धर्मपति वचन सुजाना ❋ बहुविधि नारदमुनि सुखमाना॥

दोहा--तव दरशन हित धर्मपति,तव पद देखे आइ ॥
शीलसिंधु तव पुर सदसि,निरखत मनन अघाइ३॥

चौ० असवर्णतदुहुँ दिशिमुदबाढा ❋ मैं यह चरित लखौं सब ठाढा॥
दीखे तबलगि नभ पथ जाता ❋ तेजपुंजयानन कर व्राता ॥
दुंदुभि भेरि पटह दर बाजत ❋ सुरदारिका नचत गज गाजत ॥
घंटनिगम जयध्वनि नभ पूरी ❋ रही वीन वंशी रवपूरी ॥
ऐरावतपर चढि सुर राजा ❋ आगे जात समेत समाजा ॥
यमपुर ऊपर यान अलेखे ❋ पवनवेग गमनत हम देखे ॥
देखत तिनहि शमन भय माना ❋ घुसेउ भवनभीतर अकुलाना ॥
दूत सकल दशहू दिशिभाजे ❋ भये सभासद जनु अतिलाजे ॥

दोहा--इत उत निज निज जीवलै, भगे सकलअकुलाइ
जे चेतन पुनि नरक गत, तेपि भगे बिलखाइ ॥ ४॥

चौ०-नारद एक रहे तिहि ठाँई ❋ मोरेहु नयन मुँदे वरियाई ॥
जुलनशिखासम यानन हेरी ❋ रही न सुधि किय जतन घनेरी॥
निकसिगयेजबसकल विमाना ❋ बगदे तब सब तेज मलाना ॥
तब नारद कह सुनु यमराजा ❋ सत्य वचन कहु परिहरिलाजा॥
अस तुम तेजशील बल धामा ❋ ते भयवश भागे किहि कामा॥

यक्ष दनुज सुर नर नग नागा ❋ जड चेतन तव वश बड भागा ॥
ते तुम भजेहु विमानन हेरी ❋ संशय हरहु वेगि यह मेरी ॥
सुनत वचन पुलके यमराई ❋ बोले वचन सुनहु मुनिराई ॥

यम उवाच ।

दोहा-पाप हरन श्रुति सुखकरन, पुण्य चरित्र मुनीश ॥
भूमंडल महँ वसत इक, जनक नाम अवनीश ॥५॥

चौ०-तासु प्रजा सुकृती विख्याता ❋ अतिशयसत्यधर्मयशराता ॥
चिरंजीव सब तेज निधाना ❋ सकलकृषीनिपजहिविधिनाना
गो बहु क्षीरद द्विज श्रुति भाखी ❋ बहुफल फलहिं सदा जहँ साखी
प्रजा सकलनिज निरत सुकरमहि ❋ दानदेहिजुगवहिनिजधर्महि ॥
आपु महीप शील बल गेहा ❋ हरिपद सेवत सहित सनेहा ॥
निगम नीति रत ज्ञान निधाना ❋ जासुसुयश मुनिनिगमबखाना ॥
बैर विहाय रहैं सब जीवा ❋ इमि नृप तेज नीति बल सीवा ॥
पत्नी तासु सकल गुणधामा ❋ सत्यवती वर नारि ललामा ॥

दोहा-गुरुसुर महिसुरसुरभि पुनि, करि इनकीसबसेव ॥
सेवति निशि दिन लाइ मन, वचन कायपतिदेव ॥६॥

चौ० पतिमनसुखसबविधिसुखजानै ❋ पतिचितदुचितहोतदुखमानै
पति संतोष तुष्ट चित जाकर ❋ जब पति रिस तबप्रियवचनाकर
पतिहि सपरिजन अशनकराई ❋ भोजन आपुकरति सचुपाई ॥
पर पतिपितु सुत सहज समाना ❋ निज पति सम सुरपतिहुनजाना
अपर पतिव्रत गुण बहुतेरे ❋ ते सब उर निवसत तिहिकेरे ॥
भूप जनककी प्रियपटरानी ❋ सुनुमुनितिहि जबउमारिसिरानी
कालविवश चढि जाति विमानन ❋ पुण्यकरन हित नंदनकानन ॥
शक्र सुरनयुत जात अगारी ❋ जासुतेज कर तपत तमारी ॥

दोहा-सुयश कहत जेहि चतुरमुख, चढे हंस पर जात ॥
तासु तेज सहि सकहुँ किमि, जेहि लखिहरिसचुपात॥

चौ०-सुनु मुनि तासु तेजके मारे ❋ धसेउ भागि तनु सुरतिबिसारे॥

भूत सकल अरु गण सब भागे ❁ भजे नरकगत अधम अभागे ॥
कह नारद मुनि सुनु प्रभु बाता ❁ संशय अपर हरहु रविजाता ॥
बारह रवि सम तेज सुहावा ❁ तप्त कनक तनु छबि तुम पावा ॥
श्याम वर्ण तब मुख केहि हेतू ❁ कहेउ धर्म सुनु मुनि कुलकेतू ॥
इहिठाँ जो धर्मी गण आवत ❁ चढि चढि यानन नाक सिधावत॥
तिनकर तेज सहहुँ दिन राती ❁ श्याम वर्णमुख भा इहिभांती ॥
अपरसकल तनु कवच मँझारी ❁ छिप्यो रहत कंचन छबिधारी ॥

दोहा-धर्मराजके वचन सुनि, नारद मुनि सचुपाइ ॥
वंदि चरणधनिवाद कहि, सुरपुरगे शिरनाइ ॥८॥

चौ०तबलगिगणनआइशिरनावा ❁ कारि विनती असवचनसुनावा
कछुक अधम गण हम इतलाये ❁ कछुक गणन वश आवत धाये॥
आयसु का अब कहि चुपसाधी ❁ तब लगि आइ गये अपराधी ॥
तिनहि देखि यमगणन हँकारा ❁ आये सब कर मुद्गर आरा ॥
तोमर परिघ शूल संडासी ❁ सैल कृपाण चाप शरपासी ॥
कहेउ धर्म लखि तिनहिं रिसाई ❁ निज निज कृत भुगतावौं जाई॥
सुनि यम वचन दूत तब कोपे ❁ अधमन हनि हनि नरकनतोपे ॥
ब्रह्म दण्ड कर अति विकरारा ❁ नानाभांति धरे हथियारा ॥

दोहा-मारहिं पापिननिडर चित,मुद्गरनिशित कृपान ॥
शक्तियष्टि हति नरकमहँ, गेरत दुखद निदान ॥९॥

इहिविधिमैंनिरखेद्विजघातक ❁ बहुविधिविलपतस्वामिनिपातक
वैतरणीसरिता अति घोरा ❁ शोणित पीब भरी दुहुँकोरा॥
निरखति बनति नगर जतिभारा ❁ सुनियत जहँ रव हाहाकारा ॥
कोटिन कृमि बहुवृश्चिक भरिता ❁ अतिविस्तार भयानक सरिता॥
सेवित कृष्ण सर्प वैतरणी ❁ पापिनकहँ अति शासन करणी॥
तिहि महँगिरतअधमबिलखाहीं ❁ सुकृत छाँडि त्राता कोउ नाहीं॥
मारत यमगण कहत कुवानी ❁ रे सुनु वचन अधम अभिमानी॥
कत सुत दार कहां परिवारा ❁ जिनके हित नरतनु तुम हारा ॥

दोहा-इहि विधि निरखे अमित खल, पापी दंभी नीच॥
डबत उछरत पिटत पुनि, वैतरणीके बीच॥१०॥
विश्वस्तघ्न कृतघ्न पुनि, दुराचार मतिहीन॥
तजतनिजहिदुर्भिक्षमहँ, तेपिसहतदुखदीन॥११

इति श्रीमद्दिद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने स्वर्गयमपुरवृत्तान्तवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥

नासिकेत उवाच।

दोहा-पुनि कछु कहब मुनीशहम, सकल सुनौहित मानि
जौन कर्मवश जौन तन, पावत नर इत आनि॥१॥

एकजन्मकरसुकृत दुरितजन ❁ अवशिलहतनरसुखदुखविधिवश
वसुँ श्रुति लक्षयोनि भ्रमि पापी ❁ लहत मनुजतनुअधमकदापी॥
तदपि नीच कुल निर्दय होई ❁ करत तहाँ पुनि अघ बहु सोई॥
कछु पाछिल कछु तुरत कमावा। ❁ अघ समूह वश पुनि भवआवा॥
अखिल योनि खल भ्रमत बहोरी ❁ नर हुइ नीच लहत मति थोरी॥
इहिविधि भरमत बहु युग बीतत ❁ जो जगदीश कृपा करि चीतत॥
हरि प्रताप सतसंगति आवै ❁ क्रम क्रम सुधरत शुभगति पावै॥
नातरु भरमत फिरत निरंतर ❁ दुखमयतनु बहु लहत दुरितधर॥

दोहा-गोघाती नर श्वपच हुइ, बहु तनु पावत खेद॥
मारग ग्राही सरुद हुइ, भुगतत गावत वेद॥२॥

चौ०भूलिहु विप्र प्राण हर जोई ❁ कुभुजं जनम कुष्ठीखलहोई॥
मद्यप सात जन्म क्षय रोगी ❁ विटकृमि फणि गुरुशय्याभोगी॥
सुवरण हारक पन्नग जाती ❁ होत पुलिंद गर्भतिय घाती॥
श्रुति गुरु निंदक गुरुतियगामी ❁ श्वान होत तीनौ खल नामी॥
विप्र मांस भक्षण कर जोई ❁ होत शृगाल अवशि नर सोई॥

जे पुनि विप्र वेद विक्रेता ❀ शूद्रहोइ भव गिरत अचेता ॥
जो विश्वासघात करु कोई ❀ मित्रघात पुनि तिर्यक् होई ॥
फलहारक नर अधम हमेशा ❀ फल कृमि हुइ बहुलहत कलेशा

दोहा–जे कामी गर्भिणितियहि, विलसत जानि अशंक ॥
पांडु गदी पुनि मूक हुइ, जुलत वदन सकलंक ॥ ३ ॥

चौ०कन्याघात पाप विकराला ❀ तिहि वश होत शबर चंडाला
सो जब पाप सिरात नरेशा ❀ होत दरिद्र कुरूप हमेशा ॥
तरु छेदक कृमि होत निरंतर ❀ धोबीहोत अवशि आयुध हर ॥
स्वामी घात पाप अति भारी ❀ ताते उपल कीट तनु धारी ॥
परधन हारक गृध्र मशानन ❀ होत अंध पुनि सुनत न कानन
विधिवश तनु तजि होत बिलारा ❀ करत तहांपुनि पाप पहारा ॥
जे नृप प्रजहि दुखद मरनाहा ❀ अगणित कुक्कुट तनु अवगाहा
सूत चुरावत जे पर केरा ❀ महिगतकृमि वनि पचतघनेरा

दोहा–विप्र वस्तु हर अधम नर, सन कपासके चोर ॥
जान उपानह हरत जे, मच्छ होत जल घोर ॥ ४ ॥

चौ०घृतहारक कुष्ठी तनु पावत ❀ पाछे कृमि वहि महि परआवत
होत पिशाच मांस अहारी ❀ अन्न चोर शूचीमुख धारी ॥
तेली तेल चुरावन हारा ❀ मधुहारक गर्दभ तनु धारा ॥
गंध कुसुम हरके मुख भीतर ❀ आवति गंध सुनहु मुनि नरवर
दूध चुराइ कमठ बनि आवत ❀ क्रूर स्वभाव नकुल तनु पावत
जलचर होत अजित गो प्रानी ❀ असविचारि दमरत मुनि ज्ञानी
गुप्त पाप जे करत अजाना ❀ सप्त जन्म लगि अंध बखाना ॥
पाछे तमचर होत नरेशा ❀ द्वेषी क्रोधी जोक हमेशा ॥

दोहा–विश्वदेवके बिन किये, करत जु भोजन विप्र ॥
ते पापी मिथ्याशनी, पापयोनि गत क्षिप्र ॥ ५ ॥

चौ०जे पछतात दान दे प्रानी ❀ पिकबनि कानन बोलत बानी
सखा जनक जननी गुरुद्रोही ❀ ते नर शठ बक खेचर होही ॥

कलहकार तिय बनि बनमाखी ❀ पावति खेद देव सब साखी॥
जे तियपति बंचक जगमाहीं ❀ जोंक बिना तनु तिनकहँ नाहीं
शिव मठ उपजीवी नर जोई ❀ शशक होत विनु जलबन सोई॥
जे नर देव ब्रह्म धन हारी ❀ होत कृष्ण फणि विपिन मँझारी
ताँबा काँस हरत खल जोई ❀ घंटा घंट योनि लहु सोई॥
वन उजार फलहारक जोई ❀ विंध्याचल बन कुंजर होई॥

दोहा–मद्यप भूसुर शस्त्रहर, श्वान होत है नित्य॥
प्रीति छुडावन हार नर, चक्रवाक कवि सत्य॥६॥

चौ० अनल द्विजन जे परसतपदसन ❀ होत तीनतनु पंगु अधम तन
परधन वस्तु चुरावन हारा ❀ बनि शृगाल वायस तनुधारा
दीक्षाहीन देत उपदेशा ❀ हरत द्रव्य कारि शिष्य महेशा
विप्र बिलार अवशि ते होहीं ❀ सत्य कहौं कछु दोष न मोहीं
जे तरु कुसुमित फलित उपारत ❀ जाह कवनि कुक्कुट तनु धारत
निज कुल तिय लंपट कुलघाती ❀ ऋच्छ होत बहु युग इहि भांती
देत दान लखि करत उपद्रव ❀ होत अंध फणि अंध कूप तव
मिष्ट अनेक भखत जे ते खल ❀ विरस विटप कोटर अहि मथल

दोहा–जननि जनक गुरु धर्म श्रुति, द्वेषी निंदक जोइ॥
नशै गर्भ महँ अवशि खल, जन्म सहस लगि सोइ ७॥

चौ० विधिहारि हरपूजननहिंकीन्हा ❀ कबहु न अतिथिनआदरदीना
पूजेहु कबहुँ न गंग भवानी ❀ दीन न दान विप्र सनमानी॥
कीन न हवन न तीरथ न्हायो ❀ गुरुपद पद्म प्रीति नहिं लायो॥
आलस वश जे करत न धरमा ❀ ते नर अवशि नरक गत परमा
जे शुभ कर्म करत दिन राती ❀ सुर पूजन तीरथ बहु भाँती॥
सत्य धर्मरत संयमसाधत ❀ श्रीहरि हर गुरु पद आराधत
ते नर जन्म जन्म सुख पावत ❀ सुरपुरवसिश्रुतिमुनियशगावत
यह प्रत्यक्ष सकल मैं देखा ❀ वर्णौं तुम सन कथा अलेखा॥

दोहा-इहिविधि यमपुर वृत्त लखि, आयो मैं पितु तीर॥

पितु पद लखि मन मुद भयो, सुनहु सकल मुनिधीर ८॥

चौ०-नासिकेतके वचन सुनत सब ❀ धन्य धन्य कहि कहन लगे तब
यह चरित्र तुम रम्य प्रकाशा ❀ दीन ज्ञान हिय संशय नाशा॥
अजहुँ जु मूढ कुमगु पगु धरिहै ❀ भली भाँति आपन फल भरिहै
करहिं जु सुकरम सुनि तव बानी ❀ ते दुख पावहिं तौ हम जानी॥
हमहिं नाथ अब आयसु देहू ❀ सेवक गुनि मन तजब न नेहू
अस कहि गद्गद कण्ठ भुवाला ❀ भये सकल मुनिगण तिहि काला
चरण वंदि आशिष लहि रूरी ❀ निज निज थल गमने सब सूरी
यह इतिहास पुनीत सुहावा ❀ हम नृप सादर तुमहिं सुनावा॥

दोहा-सुनि जन्मेजय जोरि कर, कहा सुनहु मुनिनाथ॥
तुम सर्वज्ञ कृपायतन, कीनो मोहिं सनाथ॥ ९॥
इतनी सुनि मुनिवर कही, सुनु महीप बडभाग॥
आयसु दीजिय हर्षि हिय, अबहिं करब हम याग १०

चौ० अस कहि मुनि गवने निज गेहा ❀ वर्णत बहुविधि भूप सनेहा॥
सुनहु सकल सज्जन मन वानी ❀ मैं निजमति यह कथा बखानी
हरि हर सत्य धर्म यश गावत ❀ सुनत सपदि अघ राशि नशावत
अस विचारि जे सुनहिं सयाने ❀ जिन निज धर्म सत्य पहिचाने
होइहि सफल काम क्षण क्षणके ❀ कहिहैं सुनहिं कथा यह तिनके
शुभमगु चलत सबहि भल लागत ❀ रामजपत कलिमल खल भागत
गुरु उपदेश मोहिं यह भावा ❀ कहि हरिशतक धर्म जश गावा
प्राकृत नरन केर गुण गावों ❀ हरि हर यश कहि शुभगति पावों

दोहा-क्षमहु चूक बुधवृन्द मम, सेवक शिशु अनुमानि
बालवचन रचना सुनहिं, साधु सुहृद सुख मानि ११

इति श्रीमद्विद्वच्चुन्नीलालात्मजचन्द्रमरीचिगर्भजकविसत्यनारायणविरचिते नासिकेतोपाख्याने सुकृतदुरितवशतनुप्राप्तिवर्णननामाष्टादशोध्यायः॥ १८॥

दोहा--कार्तिक वदि कुज सप्तमी, गोरखपुर शुभगाम ॥
रची ग्रन्थ निजकर लिख्यो, नासिकेत सोइ नाम १
संवत विक्रम भूपको, गुण भुज नव तारेश ॥
सत्यनारायण नाम मम, सुनहु सुबुध ममदेश॥ २॥
सो०--कुरावली मम धाम, मैनपुरी कर है जिला ॥
विधिवश श्रीपति राम, पाठक कीनौ शयन कर ॥
मुम्बापुर शुभ धाम, वेंकटेश्वर यंत्र कर ॥
खेमराज वर नाम, श्रीकृष्णदासात्मज ॥
इनपर द्रवहु कृपाल, कौशलेशपति श्रीरमण ॥
कृष्णविहारी लाल, संशोधक वस बदरका ॥

इति श्रीनासिकेतभाषा समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका पता-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

